ईश्वर तुम्हारे साथ रहे और जब उसने सुना कि विकी का व्याह होने-वाला है तब इस तरह आशीर्वाद देने लगी कि ईश्वर तुम को आगे २ भली राह पर चलावे और सब प्रकार से तुम सुखी रहो यह बुढ़िया बड़ी बातूनी थी जब मैंने कहा कि मैं तुम्हारी फिर मुलाक़ात करूंगी उसने अपनी आशा ज़ाहिर की कि आप मुझे किसी रोज़ बुलावेंगी और इसी तरह से * क्रिटीक्रियर ने भी कहा हम लोग तीन और झोपड़ियों में गये पहले बीबी सैमेन्स की झोपड़ी में यह उस बूढ़ी बेवा की जो दूसरे दरवाज़े पर रहती थी पतोह है इसका लड़का बीमार था फिर एक छोटे नाले के पार जाकर एक दूसरी बुढ़िया के मक़ान पर पहुंचे और इसके पीछे बेलेयर सितारिया के मकान पर गये वहां से गाड़ी पर सवार होकर पीछे फिरे उतर कर बूढ़ी बीबी ग्रेंट से मुलाक़ात की यह बहुत सुथरी और साफ़ है उसे मैंने एक पोशाक और रूमाल दिया वह कहने लगी तुम मुझपर बहुत मिहरबान हो मुझपर निहायत रहम करती हो। हरसाल मुझे ज़ियादा २ देती हो और मैं सालबसाल बुढ़िया होती जाती हूं उसके साथ कुछ वक़्त बात चीत होने के बाद उसने कहा ऐसी सुंदर तुमको देखकर मैं बहुत खुश हूं उसकी आखें से आंसू बहने लगे और विकी के जाने का हाल कहकर बोली मैं बहुत उदास हूं और सोचती हूं कि वह भी उदास है फिर कहा कि मैं डरती हूं कि उससे याने शाहज़ादी से फिर मुलाक़ात न होगी फिर बोली मुझे बड़ा अफ़सोस है कि मैंने ऐसा कहा लेकिन मेरा मतलब नुक़सान का नहीं है मैं हमेशा जो मुनासिब समझती हूं कहदेती हूं। प्यारी बूढ़ी बीबी वह बहुत अच्छी औरत है ॥

---

* वह जेनवरी १८६५ में मरगयी ॥

हक़ीक़त में इन अच्छे लोगों की मुहब्बत जो हर एक की मुलाक़ात से खुश होते और हर एक काम में दिल लगाते बड़ी असर रखती और निहायत खुशी बखशती है ॥

फीटहार्ट में शाहज़ादे के डेरे में जाने का हाल ।

मंगल—अक्तूबर ६. १८५० ॥

बारह बजे दोनों लड़कियों के साथ ऐरन्स तक गाड़ी पर गई वहां



अपने २ टट्टुओं पर हम लोग सवार हुए (ब्रोन और राबर्टसन साहिब पैदल हम लोगों के साथ चले) कोरिबुयी में से होकर बराबर उस नये रस्ते पर फीथलूयी में से फीटहार्ट के उस बड़े ढालुए चढाव के जड़ तक हम लोग गये वहां घोड़ों से उतरकर पैदल चले जब उस रस्ते के ऊपर पहुंचे एकाएकी आलबर्ट के डेरे में आगये जो ठीक मोड़ के किनारे पर था अब तक आलबर्ट वहां न थे वे छ बजे बाहर गये थे उनके साथ लाहलीन और कई एक पहाड़िये थे वह छोटा मकान कुछ बुरा न था उसमें संदूकों के रखने के वास्ते कुछ खाने बनेथे लेकिन हवा तेज बहती थी और उसके भीतर आती थी पाव घंटा हम लोगों को ठहरना पड़ा कि आलबर्ट आगये छ बजे से वे बाहर गये थे तीन बारह सिंगों

को मारा था उनमें एक खराब था कल शाम को जो अच्छा था उसके मारने में आलबर्ट को बहुत तकलीफ पहुंची थी रात को ठंढ और हवा ज़ियादा थी लेकिन वे अच्छी तरह सोये खुले हुए दरवाजे के पास उस छोटे मकान में हमलोगों ने खाना खाया ॥

बर्फ पड़ने का हाल ।

सितंबर १८ सन् १८५८ ई० ॥

अफसोस कल जब हम लोग उठे तो हवा निहायत खराब थी बर्फ के मारे हर एक चीज़ सफेद होगयी थी ज़मीन पर एक इंच ऊंचा बर्फ गिरा था और आज फजर को पांच बजे से जैसा गिरा था वैसही गिरता जाता था हमने चाहा कि हम लोग बर्फ से दब जांय और चल न सकें अगर ऐसा होता तो हम लोगों को बड़ा आनंद होता साढ़े ग्यारह बजे तक बर्फ पड़ता रहा उसके बाद फरछा हुआ पहाड़ियां निहायत सफ़ेद देखपड़ती थीं सूरज निकला और बहुत प्रकाश हुआ आलबर्ट कारप के पेड़ों को छोड़कर और पेड़ों को अर्थात् गारमाडिक के पेड़ों को कटवाना चाहते थे लेकिन डाक्टर राबर्टसन् साहिब के साथ राबरेक जगह को देखने के लिये जहां पर डंकान का नया मकान बननेवाला था क्रेक गवन के पास जाना था जो कि क्रेगलुरागेन के सामने इस गांव के ऊपर रमनीक देखपड़ता है और मैं ग्रेन्ट के मकान पर उससे मुलाकात करनेवाली थी ॥

एक बजे आलिस और लेंचन * के साथ ग्रेन्ट के मकान पर मैं गयी वहां आलबर्ट से मुलाकात हुई वे गाड़ी पर हम लोगों के साथ चले

* शाहज़ादी हेलीनी ।

सचमुच दिन रमनीक था हम लोग नदी के पार हुए और नेली की झाड़ी की तरफ़ जाते थे बहुत नज़दीक बारहसिंगे की आवाज़ सुन पड़ी हम-लोग ठहर गये और रजाई और लबादे पर बैठे, इससे भीगने से बच गये हम लोग ठहर गये आलबर्ट उस बारहसिंगे के नज़दीक गये देखा कि वह चलता था आलबर्ट को बंदूक की आवाज़ दो बेर सुनपड़ी और बारहसिंगा घूम कर ठहर गया फिर गाइब होगया आलबर्ट ने फिर गोली मारी पर बारहसिंगा डी दर्या के पार होगया इसलिये हम लोगों ने अपनी राह पकड़ी और उस मनोहर पुराने कारीबुई में गये आलबर्ट फिर कर देखने लगे कि कोई हिरन तो नज़दीक नहीं है उस समय हम लोग उनकी प्रत्यासा में ठहरे फिर एक ऐसी जगह में पहुंचे जो हमेशा तर रहती है लेकिन पानी बरसने और बर्फ पड़ने के सबब से निहायत खराब होगयी थी यहां मेरी सवारी का टट्टू न था कि चढ़कर चलूं पांव के भींगने के डर से न चाहा कि लंबी घासों में से पैदल जाऊं आलबर्ट ने यह बंदोबस्त किया कि प्लेड में रखकर मुझे लेजांय पहले लेंचन को लेगये पर लोग उसे ऐसा नीचे किये थे कि उसके पांव भीगगये आलबर्ट ने कहा कि प्लेड आदमियों के कंधे पर रखदियाजाय और मैं इसपर बैठूं ब्रोन और डंकन जो दोनों बहुत मज़बूत और चालाक थे उनको यह काम सुपुर्द हुआ और मैं अच्छी तरह अपनी बांह हर एक शख़्स के कंधे पर रखके बैठी और कुशल क्षेम से उसके पार पहुंची सब हैलेंडर लोग क्या स्त्री क्या पुरुष मनभावने और सुहावने थे और बातें उनका बहुत अच्छी थीं और खास करके मर्द लोग अशराफ थे। जब हम लोग हाज़िरी खारहे थे आलबर्ट के बंदूक की आवाज़ नज़दीक सुनाई दी और सब लोग एक बारगी दौड़े इसके बाद तुरंतही आलबर्ट हम लोगों

से आनमिले उनको उस बारहसिंगे के पीछे दौड़धूप में बहुत दुःख उठाना पड़ा कई दिनों के बाद अंत में उसे मारा और हम लोगों के देखने के लिये उसे लाये रंग उसका बहुत फीका था सींग उसकी बहुत सीधी और अद्भुत प्रकार की थी बाद इसके कारप के गिर्द थोड़ी दूर तक घूमते रहे सैर अच्छी हुई थोड़ा सा बर्फ पड़ा था लेकिन तुरंतही धूप निकल आई पहाड़ियां बर्फ से छिप गई थीं सुनहरे बर्च के पेड़ भूरी २ पहाड़ियों पर सुहावने लगते थे और आकाश निर्मल था इन सब की सुंदरता का वर्णन नहीं होसक्ता ॥

अति निर्मल अकतूबर महीने में ब्रेकन बदल जाते हैं और हीदर की कलियां कुम्हला जाती हैं हीदर और फर्न के बीच हरे २ पेड़ भले मालूम होते हैं आलडर और ओक के वृक्ष हरे रहते हैं रवन का पेड़ पीला और सुर्ख आस्पन चौड़े २ सोने के टुकड़ों के समान दिखलायी देता है और बर्च के पेड़ पर कहीं २ सुवर्ण और बाला के समान दिखलायी पड़ता है फिर वे सब उसपर से गिर पड़ते हैं ॥

ईश्वर की रचना देखकर बड़ा अचरज होता था और दिल में उदासी होती थी क्योंकि फिर देखने में ये चीजें न आवेंगी और कोशिश की कि ये सब बातें मन में ऐसी बैठ जावें कि फिर भूलें नहीं क्योंकि बारबार हम लोग फिर इनको न देखेंगे । हम लोगों ने सन् १८५२ में इसके मानन्द देखा था अगर्चि बर्फ की आंधी और ऊंची २ पहाड़ियों पर बर्फ का जम जाना देखा है लेकिन तब से ऐसा नहीं देखने में आया ॥ *

* पादरी फ्रेडरिक राबर्टसन साहिब ने भी अपने लेकचर में इसी तरह का बयान किया है उनका किया हुआ टैरोलिस का बयान खास करके हैलेंडर पर लगसक्ता है हमारा संगी टैरोलिस हिरन का शिकारी था यह मनुष्य कामकाज करने में अंगरेजी मज़दूर के बराबर होसक्ता है ऐसा संगी का मिलना इंगलेंड में बहुत मुश्किल है कि जिसमें तरफैन को

मार्वेन के ऊपर चढ़ जाने का हाल ।

सितंबर १४ सन् १८५६ ॥

प्रीतम आलबर्ट के एक बजे आबर्डन में जाने का हाल सुनकर मेरे मन में उदासी हुई वहां आलबर्ट को ब्रिटिश समाज का मुख्य कार्य करना था आलिस दो लेडी लार्ड चार्ल्स फिटज़राय और ब्रोन इनके साथ में थोड़ी देर के बाद मार्वेन के लिये रवाना हुई हम लोगों ने गर्न के नज़दीक डाक के घोड़े किराये किये और उस खोह के दहनी तरफ से उस नये अच्छे रस्ते पर चले और हलान की जगह छोड़ दी अढ़ाई बजे मार्वेन के पास पहुंचे यह जगह शिकारगाह से दूर न थी यहां पर हम लोग अपने टट्टुओं पर सवार हुए और हम लोगों का क़ाफ़िला नौकरों के साथ रवाना हुआ जेम्मी कोटस् एक बूढ़ा जान पहचानवाला जो अब उस

आराम मिलो दूसरे नौकर या तो बहुत नकचढ़े होजाते हैं या मालिक उनको बहुत दबाता है लेकिन इस शख़्स में यह बात न थी हम लोग साथही साथ घूमते फिरते और साथही खाना खाते इसकी तबीअत आज़ाद थी लेकिन दूसरों के साथ बहुत अदब से पेश आता जब रात को हम लोग जुदा होते तो वह ऐसे अदब और नम्रता से रुख़सत होता जैसे कि कोई अशराफ होता है। मुझे इसका यह सबब मालूम होता है कि इसको संगत अच्छे २ लोगों को मिली थी ॥ उस जगह पर बादल एक अजीब तौर से पहाड़ के चारों तरफ थे जिस के सबब से वह पहाड़ भयानक और जानदार मालूम पड़ता था जब हम लोग सूरज के निकलने के घंटे दो घंटे पहले नीचे साये में घूमते थे तो सवेरे की किरनों से उस खाड़ी के सामने की पहाड़ की चोटी रोशन होती थी इस तौर पर सैर करते हुए उन बादलों को और इस शख़्स को जिसकी सब चाल चलन सब बाहरी चीजों के मुवाफ़िक थी और जो इन सब तमाशों को देखता था इकट्ठा देखना बग़ैर यह खयाल किये कि इन सब चीजों के सबब से वह शख़्स इस तौर का है और इस देश के लोगों को मुअद्दब होना और और जगह के लोगों से बिहतर होना जरूर है गैर मुमकिन था टोबरना वालिच की पोथी जिसे आर्थर हुक क्लार्क ने बनाया ॥

जगह का निगहवान है रस्ता बतलाता था करीब आधे रस्ते के जा-कर एक नाले पर हम लोग ठहरे कपड़े बिछा कर हरी जमीन पर बैठ-कर कुछ खाया फिर इधर उधर टहलने लगे उस जगह का नक्शा खेंचा अपने टट्टुओं पर सवार होकर उसकी चोटी पर चढ़े जो कि धसाऊ और ढालुआं थी मेरा टट्टू ऐसा मोटा था कि हांफने लगा मार्वेन २००० फुट ऊंचा है वहां से चीज़ें बहुत ख़ूबसूरत देख पड़ती थीं यह पहाड़ बड़ा था लेकिन चीजें नज़दीक दिखलाई देती थीं वहां से पहाड़ नीले देख पड़ते थे और रंगत उनकी बहुत सुंदर थी डूक आव्रिचमंड की मिलकियत पर हम लोगों ने नज़र की उस पहाड़ को देखा जिसे बक आफ् काबरक कहते हैं और बराबर स्लेट की पहाड़ियों को देखा पूरब ओर आबर्डन और नीला समुद्र दिखलाई देता था बगैर चशमें के हम लोग जहाज़ भी देख सक्ते थे टालैंड और बालाट के बीच में मैदान देखा और ठीक दक्खन ओर कीन पहाड़ नीचे दूरतक चलागया दिख-लाई देता था नैऋत्य कोण में लाकनागार था पच्छम ओर बेनआन और बिन्नाभार्ड और मूयिक और सामने की ज़मीन पर डीसैड थी यह अति मनोहर था हम लोगों ने जहां कुछ खाया था पैदल गये और उसके नीचे सवार होकर गये यहां पर आग चाहपती समोसा हम लोगों को मिला एक बीबी और साहिब ने जो सर जे जी राटक्लीफ की बेटी और बेटे थे और शिकारगाह में रहते थे मिहरबानी से हम लोगों के लिये बनाया था हम लोगों ने चाह पी साढ़े छ बजे गाड़ी पर सवार होकर चले बालमोरल में साढ़े सात बजे पहुंचे डेरे पर अपने स्वामी के न मिलने से मुझे उदासी हुई ॥

आबरडीन से शाहज़ादे के फिर आने का हाल ।

सितम्बर १५ सन् १८५६ ॥

कल रात को तारबर्की से खबर आई कि आलबर्ट की मुलाकात बड़ी खुशी के साथ हुई और सब बातें भी जैसा चाहिये वैसीही हुईं शुक्र खुदा का लाकनागर पर आलिस हेलना बर्टी लेडी चर्चिल कर्नल ब्रूस और अपने नौकर चाकरों के साथ में चढ़ी और छ बजने के बाद फिर आई । दस मिनिट बाद सात बजने के हमारे प्रिय आलबर्ट आपहुंचे सब बातें अच्छी तरह बीतीं उनसे बहुत से विद्यावानों से भेट हुई सब लोग उनके संभाषण से प्रसन्न हुए मुलाकात में बड़ी खुशी हुई बांचोरी हौस (टामसन साहिब का) जहां वे उतरे थे (जो कि आबरडीन से चार मील है) उन्हों ने कहा बहुत सुभीते का था ॥

ब्रिटिश समाज के सभासदों की ज़ियाफत का हाल ।

सितम्बर २२ सन् १८५६ ॥

भोर हुआ धूप निकल आई एकाएकी ज़ोर से हवा बहने लगी हम लोग कुछ डरे लेकिन साफ था हम लोगों को उम्मेद थी कि हवा मेंह को रोकेगी लेकिन हाज़िरी खाने के बाद जब हम लोग तैयारी करते थे एक लहरा पानी का आगया और साढ़े ग्यारह बजे से बड़े ज़ोर से बरसने लगा आसमान सफेद पर्दे के मानन्द होगया इससे कुछ हम लोग डरे साढ़े बारह बजे तक बरसता रहा । मैं नाउम्मेद होगई पर अंत

को फरक्का होने लगा उसी समय पड़ोस के लोग अपने परिवारों के साथ और दूसरी ओर से कुछ किसान लोग (अर्थात् हेरन्स, डंकेन ब्रोन के पिता और भाई लोग) आपहुंचे और तब बड़ी २ गाड़ियां विद्यामानों से भरी हुई आईं। दो बजे हम सब लोग तयार हुए आलबर्ट और लड़के कुर्ती पहने थे में और लड़कियां शाहाना मख़मली पोशाक पहने थीं यद्यपि उस समय पानी बरसता था और हवा तेज़ बहरही थी पर बहुत सुहावना और भला लगता था धूप की किरनें छिटक रही थीं हैलेंडर लोग अच्छी पोशाक पहने हुए बांसुरी और बाजे बजा रहे थे और पहाड़ों की पीछे की भूमि सुंदर लगती थी इन सब को देखकर बड़ा अचरज और आनन्द होता था, हम लोगों के बाहर आने के पहले कर्नैल फ़ारकुहारसन् साहिब अपने लोगों के साथ लार्ड फेफ डफ लोगों के साथ और चार्ल्स फार्ब्स साहिब अपने लोगों के साथ उस जगह पर आये और हम लोगों के सामने खड़े हुए और तमाशबीन लोग (अर्थात् उस देश के लोग) उनके पीछे थे हम लोग चबूतरे पर खड़े हुए सब लोग हम लोगों के पास ठहरे और विद्यावान लोग भी हम लोगों के दोनों तरफ बराबर ढालुई जगहों पर खड़े थे तीन बजे के करीब खेल शुरू हुआ हम लोगों ने हर एक खेलनेवाले को इनाम दिया हम लोग खेलनेवाले लोगों से बात-चीत करते हुए चबूतरे पर टहलते २ बड़े तंबू के पास आये इसके बाद ऊपर के चबूतरे पर दौड़ देखने के लिये फिरे यह तमाशा भी अच्छा हुआ लेकिन लोग ठंढ की तकलीफ में थे वे कुर्ती के सिवा कुछ न पहने थे वे लोग बड़ी खूबसूरती से दौड़ते थे उन लोगों ने अपने शरीर पर कपड़ा लपेटा और तब मेरे पास इनाम लेने के लिये आये सब के पीछे रील और घिली कालम का नाच हुआ जज लोग घिली

कालम का हाल न समझ सके कई बार नाच हुआ और अंत में उन्हों ने सब से अच्छे नाचनेवाले को बाहर कर दिया और कहा कि इसका नाच बहुत अच्छा हुआ नाच होने के बाद जब हम लोग चले लोगों ने बड़ा जयजयकार और आनन्द मचाया। साढ़े पांच बजा था खिड़की से देखते थे कि हैलेंडर लोग कूच कर रहे हैं सब लोग चले जाते हैं और चार बड़ी गाड़ियां विद्यावान लोगों से भरी हुई चली जाती हैं हम लोगों ने प्रोफेसर ओयन सर डेविड ब्रूस्टर सर जान बोरिंग जे रास्को और सर जान रास से * मुलाक़ात करके बातचीत की जब सब लोग चले गये हम लोग गरमाजाने के लिये कुछ टहले बहुत खुश हुए कि हर एक बात अच्छी तरह हुई ड्यूक आफ रिचमांड सर आर मर्चिसन कर्नेल सेबिन बांचोरी होस के टामसन साहिब और प्रोफेसर फिलिप्स जो सभा के सकर्त्तर थे सब के सब यहां सोये और खाने में शरीक हुए मैं अपने भाई फिलिप (अर्थात् फ्लेंडर के कोंट) और ड्यूक आफ रिचमांड के बीच में बैठी। सब साहिबों ने हमारे प्यारे आलबर्ट के अद्भुत व्याख्यान की बड़ी प्रशंसा की इससे भलाई हुई और सब किसी को आनंद हुआ॥

सामने फार्ब्स साहिब के कंपू की आग देख पड़ती थी॥

---

* ज़िआफत में सर राबर्ट मर्चिसन साहिब से और दूसरों से हम लोगों ने सुना कि आज फजर को बेचारे सर जान फ्रेंकलिन साहिब की लाश और उनकी चीज़ों और उनके साथियों की चीज़ों के मिलने की खबर मिली है॥

इंक्रोरी में जाने का हाल ।

सितम्बर ३० सन् १८५६ ॥

बीस मिनिट बाद ग्यारह बजे के हम लोग हेलना और लूई के साथ गाड़ी के भीतर बैठकर और ग्रांट कोच बाक्स पर बैठकर ब्युलिग झील की तरफ ब्लेयर ग्लास और डालडोनी के खेतों में से और कार्नडेबन के शिकारगाह में से जो १० मील दूर था होते हुए रवाना हुए । यहां हम लोगों के टट्टू मिले (हमारा विक्टोरिया था) और बराबर झील के कनारे होकर खाड़ी के ऊपर की घूमी हुई राह से जो कहीं २ मालूम न पड़ती थी सवार होकर गये फिर एक छोटी नदी के कनारे चले इस नदी का नाम कोई न जानता था क्योंकि वहां हमारे साथियों में से कोई न गया था । उन पहाड़ियों पर कहीं २ बर्च के पेड़ लगे थे और दरी में नीचे घास जमी थी हम लोगों ने यहां हिरन देखा ज्यों ज्यों हम लोग इंक्रोरी के नज़दीक गये (लार्ड एच बेंटिंग का शिकारगाह) त्यों त्यों वह जगह अधिक रमणीय देख पड़ती थी इसे देखकर टिल्ट की खाड़ी हम लोगों को याद आई और इंक्रोरी का स्थान बहुत सुंदर था एवन नदी की सुंदर धारा पहाड़ों से निकलकर यहां बही थी । इंक्रोरी में लोगों से पूछा कि गेर्न शील में से होकरके पहाड़ियों के ऊपर पहुंचने की कोई राह है या नहीं उन्हों ने कहा कि रस्ता है लेकिन ग्यारह मील के लगभग दूर है । उस रस्ते से न तो ग्रांट साहिब और न ब्रोन साहेब कभी गये थे लेकिन हम लोगों ने वहां जाना कबूल कर लिया और मैं अचानक चलने के लिये खुश हुई । इन मनोहर पहाड़ियों में जहां कोई न था हम लोग चले केवल हमारे संग हेलेंडर

लोग थे जो कुछ तकलीफ़ नहीं देते लेकिन आनंदित और मगन और प्रसन्न रहते हैं और चलने फिरने को तयार और हर एक चीज़ पर निगाह करते हैं इस तरह से हम लोग चले इंक्रोरी के ऊपर मोड़ पर से फिर कर पहाड़ियों के दरमियान से गये जहां से लागनाल दिखलाई देता था। यहां एक छोटी घास से हरी पहाड़ी पर बैठ कर कुछ खाया पीया ॥

खाने और थोड़ी दूर टहलने के बाद हम लोग फिर सवार होकर ब्रोनको की राह से (जिसके दूसरी तरफ़ हम लोग गाड़ी पर सवार होकर गये थे) एक दलदल पर गये यहां एक गड़रिये से मुलाक़ात हुई इस मनुष्य से ग्रांट साहिब ने कुछ ख़बर पाई। तुरंत हम लोग उस दरी में अनाज के खेतों के पास आगये फेवंके और इंकमोर के पार होकर एक अच्छी राह पर पहुंचे यहां पर ब्रोन और ग्रांट साहिब पांच मील से अधिक एक घंटे में बिना ठहरे अद्भुत चाल से घूमे और ब्रोन साहिब के चटक चलने से बड़ा अचरज होता था हम लोग डालना डांफ शील के (सर चार्ल फ़ार्ब्स का शिकारगाह) पार होकर पुरानी कूंपू की राह चले गये काकब्रिज को छोड़ दिया यह एक छोटा क़सबा है इनवर्नेस के रस्ते पर यह हमारे बायें था और पुराना बुर्जकार्गाफ का हमारे दाहिने था हम लोग डान नदी की ओर देखने लगे उन पहाड़ियों में से एक पर जाने के लिये जल्द यह रस्ता छूट गया यह पहाड़ी डान नदी की एक शाखा पर था और बड़ा उजाड़ और भयानक देख पड़ता था। डालचुपार और डालवीन के हम लोग पार हुए और जब ऊपर चढ़ने लगे उस समय कुछ दूर पर बाई और टार्नाहाइश देखा। इस पहाड़ी के रस्ते से कई एक टूटे फूटे पुलों पर जाने के बाद हम लोग फिर उस रस्ते पर पहुंच गये जिसपर से गाड़ी पर सवार होकर टार्नाहाइश

की ओर गये थे । जल्द २ अंधेरा होने लगा लेकिन बहुत फरछा था मैं ओर लड़कियां उतर कर जल्द २ कुछ दूर पैदल चलीं आलबर्ट ओर भी आगे बढ़गये थे इस बीच में ग्रांट साहिब अपने टट्टू पर सवार होकर चले । पी राबर्टसन ओर केनडी साहिब सिवाय उनके जिनका कि मैं ने नाम लिया है टोकरी लेजाते थे ॥

हम लोग अपने २ टट्टुओं पर सवार हुए ब्रौन साहिब हमारे टट्टू को ग्लासकाइल पहाड़ी पर अद्भुत चाल से ले चले निदान सात बजने के बाद निहायत अंधेरे में गेर्नशील में पहुंचे । वहां एक छोटी सराय में हम लोगों ने गाड़ी पाई ओर सवार होकर बहुत जल्द चले मैंने आज्ञा दी कि टट्टुओं को कुछ खिलाकर फिर लावें । हम लोग घर पर बहुत धीमे २ गाड़ी पर सवार होकर जानेवाले थे क्योंकि राह अच्छी न थी ओर कहीं २ ढालुआं थी ॥

रात बहुत सुहावनी थी । हम लोग आठ बजने के १० मिनिट बाद घर पर पहुंचे दिन मनोहर था । मैं बहुत चाहती थी कि हम लोग इस तरह सफ़र करें ओर हैलेंड में सब अद्भुत जगहों को देखें । हम लोग ३५ मील चले थे तिसमें साढ़े उन्नीस मील घोड़े पर गये । वे छोटी लड़कियां सदा बहुत प्रसन्न थीं ॥

॥ बेन मुद्दक ढूई के ऊपर चढ़ने का हाल ॥

शुक्र अकतूबर ७ सन् १८५६ ॥

साढ़े आठ बजे हाज़िरी हम लोग खाचुके जब नौ बजने को २० मिनिट बाक़ी था हम लोग गाड़ी पर बैठीं ओर आलिस ओर अपने नौकरों

के साथ सवार होकर चले उस नदी के दूसरे तरफ़ बराबर चले गये। दिन बहुत अच्छा था और साफ़ रहने की उम्मेद थी लेकिन पहाड़ियों पर कुछ २ बादल देखपड़ते थे इस से हम लोगों को चिंता हुई कासलटन में हम लोगों ने चार घोड़े डांक के लिये और दरी की शील तक सवार होकर गये यह वही सुंदर जगह है जहां परसाल हम लोग आये थे इसे आलबर्ट ने कभी नहीं देखा था ठीक ग्यारह बजे के पहले हम लोग वहां पहुंचे। हम लोगों के टट्टू केनेडी राबर्टसन और जेमीस्मिथ के साथ थे। एक टट्टू पर खाने पीने की टोकरियां लदी थीं जब सब लबादे आदि कपड़े टट्टुओं पर रक्खे गये और लोग ले चलने लगे हम लोगों ने सवार होकर चलना शुरू किया मैं विकटोरिया पर आलिस डाबिन्स पर थी जार्ज मकेहार्डी जिनकी उमर ज़ियादा थी और जो उस देश को जानते थे (और जो राह दिखाने का काम करते) और जानवरों पर लोगों का असबाब रखकर पहाड़ियों के पार पहुंचाते रहनुमाई करते थे हम लोग सवार होकर (मेरे टट्टू को ब्रौन साहिब बहुत देर तक चढ़ाते उतारते ले जाते थे) कमसे कम चार मील ग्लेडरी के ऊपर गये यह बहुत अच्छी जगह है कहीं २ सुंदर बन था केर्नगरी बाईं ओर थी और दरी का पानी नीचे बहता था॥

वह रस्ता बहुत ख़राब और पथरैला था और चारपायों के आने जाने से टूट गया था। उस दरी के सरहद्द पर हम लोग एक हलाव के पार हुए कुछ साफ़ ज़मीन पर चले फिर बहुत खरखरी और ढालुई जगह में से होकर बाईं ओर फिरे तब कारीईचन के ऊपर चढ़े यह जगह बहुत भयानक और ख़राब थी ढूहे जाबजा बड़े २ थे दाहिनी तरफ़ एक ऊंचा पहाड़ था नाम उसका बेनमेन है और बाईं ओर कार्न-

गार्म नाम पहाड़ था। जब हम लोग इस ढालुआं पहाड़ी की चोटी पर पहुंचे (हम लोग दरीसील से ऊपर चले आते थे लेकिन मालूम न होता था) उसी नाम के एक झील पर आगये उसको देखकर लाकनागार और लाकनानयन हम लोगों को याद पड़ा इसपर से कोरीस बेनआन आदि भयानक पहाड़ियां देखपड़ती हैं। हम लोग क्रम २ बहुत ऊपर चढ़गये लेकिन कुहासा ऐसा पड़ता था कि जो लोग हमारे सामने और नज़दीक थे देख न पड़ते थे आलबर्ट खूब घूमे थे ठंढा बहुत था कुहरा और भी ज़ियादा हुआ बेनमूइक दूई के टीले पर हम लोग चढ़गये हम लोगों को न जान पड़ता था कि हम लोग ज़मीन पर हैं या पहाड़ पर हैं। लेक़िन मैं और आलिस उस चोटी पर चढ़ने लगी दो बजने पर कुछ मिनिट के बाद हम लोग उसपर पहुंचे चट्टानों पर बैठकर उस ठंढी हवा में कुछ खाया पीया । ज्योंहीं हमलोग बैठ गये हवा का ऐसा झोंका आया कि कुहासा तित्तर बित्तर होगया और अजब तरह की कैफ़ियत हुई और बड़ी बहार नज़र पड़ी। हम लोग वहां एक पत्थर के टीले पर बैठकर कुछ खाने लगे हमारे संगी साथी जमा होकर टट्टुओं के साथ हमारे नज़दीक ठहरे रहे । खानापीना होने के बाद आलबर्ट आलिस के साथ उस टीले तक दौड़ कर गये कि उस रमणीय जगह को देखें मुझे भी अपने हमराह बुला भेजा मैं भी ग्रेंट साहिब की सहायता से उसपर चढ़ गई क्योंकि वहां बहुत से बड़े २ पत्थर के टुकड़े पड़े थे उसपर चलना बग़ैर मदद के मुशकिल था । हवा फिर बड़े ज़ोर से बहने लगी लेकिन वह जगह क़ाबिल देखने के थी। सारा बयान मैं नहीं करसक्ती लेकिन हम लोगों ने उस जगह को देखा जहां से पहाड़ों के दरमियान डी नदी निकलती है उन पहाड़ों के नाम ये हैं वेल आफ डी बेनीग्लो बेनब्रेकी

बेन्नाभोर्ड बेनश्रायन आदि श्रोर बहुत सी बड़ी २ श्रोर भारी चट्टानें श्रोर ढहियां श्रोर टीले नज़र पड़े वहां निहायत भयानक श्रोर सुनसान था सिवाय हम लोगों के श्रोर हमारे संगी साथियों के कोई दृष्टि में न आता था आलबर्ट लड़कों के साथ आगे बढ़े लेकिन मैं ग्रेंट साहिब के साथ उस टीले पर अपनी जगह को फिर आई क्योंकि मैं उसपर चढ़ न सक्ती थी। इसके बाद तुरंतही हम लोग टहलने श्रोर बिल्लौर पत्थरों की तलाश करने लगे श्रोर कई एक छोटे २ हम लोगों को मिले। कुहरा नीचे साफ़ होगया था यहां तक कि सब अच्छी चीज़ें दिखलाई देने लगीं। बेनमूइक ढूई ४२५० फुट ऊंची है स्काटलेंड में इस्से ऊंचा कोई पहाड़ नहीं है। मैं श्रोर आलिस कुछ दूरतक सवार होकर चली लेकिन जहां कहीं बहुत ढालुआं था पैदल चलना पड़ा। आलबर्ट श्रोर बर्टी तमाम वक्त घूमते रहे। मेरे पास थोड़ी सी शराब श्रोर पानी था मैं ने पिया क्योंकि लोग कहने लगे कि निरा पानी सरदी करेगा। तब हम लोग सवार होकर चले फिर उतरना न पड़ा आलबर्ट ग्रेंट साहिब से बड़े आनन्द से बातचीत करते थे इसपर ब्रोन साहिब हैलेंड की बोली में मुझसे कहने लगे कि जो मनुष्य सदा संतुष्ट रहता है उसके संग सैर करना बहुत भला लगता है। कल्ह जब प्रियतम आलबर्ट के आखेट का वर्णन करने लगी कि मैंने देखा है कि उनको कभी कोई बात दुर्लभ नहीं हुई इसपर ब्रोन साहिब कहने लगे कि राज में सब कोई कहता है कि ऐसा दयालु स्वामी कभी कोई नहीं भया मुझे बिश्वास है कि हम लोगों की केवल यही अभिलाषा रहती है कि उनको प्रसन्न रक्खें। मैं ने कहा उन्हों ने सचमुच ऐसाही किया है*॥

* हम लोग सदा हैलेंडवालों से बातचीत किया करते थे क्योंकि हैलेंड में इन्हीं लोगों से मुलाक़ात होती है शाहज़ादे ने उनकी चालचलन सुधाई श्रोर बुद्धिमानी की बहुत प्रशंसा की इन्हीं गुणों के कारण उनसे बातचीत करना भला लगता है श्रोर उससे फ़ाइदा निकलता है॥

सवा छ बजे दरी के शील के पास पहुंचे वहां कुछ चाह मिली उसे हम लोगों ने उसी शील* में पिया और फिर क़रीब साढ़े छ बजे के उंजाली रात में हम लोग चले। कास्टलटन में साढ़े सात बजे पहुंचे और इसके बाद बादल घिर आया। ठीक सवा आठ बजे हम लोग बालमोरल में आये बहुत खुश हुए और ज़रा भी नहीं थके सब चीज़ें अच्छी तरह सजी थीं और कुछ शोरगुल न था इस दिन को मैं कभी न भूलूंगी इसका असर मेरे दिल पर निहायत होगया था सचमुच इसके देखने से असर पैदा होता है॥

ग्लेनफिसी और ग्रेनटौन में पहली बड़ी यात्रा का वर्णन।

होटेल ग्रेनटौन मंगल सितंबर ४ सन् १८६० ॥

आज शाम को ख़ूब सैर करने के बाद हमलोग यहां पहुंचे आज के हाल का बयान मैं करती हूं। साढ़े सात बजे बालमोरल में अपने कमरे के भीतर हम लोगों ने हाज़िरी खाई और आठ बजे या कुछ थोड़ा उसके बाद लेडी चर्चिल और जर्नैल ग्रे के साथ गाड़ी पर (ग्रेंट और ब्रौन दस्तूर के मुवाफ़िक़ कोचबाक्स पर थे) कासलटन के लिये रवाना हुए वहां घोड़े बदले गये डी के लिन के पार गेल्डी के चरवाहे के शील तक बराबर पांच मील चलेगये वहां हम लोगों के टट्टू और एक रहबर जिसका नाम चार्लीस्टुवार्ट था मिले। चटपट सवार होकर बराबर गेल्डी में चले उसी में से हलकरके बारबार चलना पड़ा इसलिये कि दलदलों में न जाना पड़े और ग्लेन गेल्डी तक बराबर दो घंटे सवार

* शील का अर्थ छोटीसी शिकार की जगह है॥

होकर चले एक दलदल मिला वह जगह बजगह ऐसा नरम और धसाऊ था कि कई बेर टट्टुओं से उतरना पड़ा पहाड़ियां भयानक थीं पर बहुत ऊंची न थीं पेड न थे बलकि बहुत दूर तक हीदर भी न था यह जगह ख़ूबसूरत न थी आख़िर फिसी के नज़दीक आये । और दाहिनीओर फिर कर उस दरी तक आये इसे हम लोग दूरसे देखसक्ते थे फिसी और गेल्डी एक पटपर भूमि पर निकली हुई हैं इन दोनों के बीच बहुत थोड़ा फ़रक़ है । फिसी बहुत अच्छी तेज़ धारा है पत्थर के टुकड़ों से भरी हुई है ज्यों २ दरी के नज़दीक पहुंचिये जो कि बहुत गर्त है त्यों २ वह बहुत ख़ूबसूरत होती जाती है ख़ास करके ईचार्ट नाले के बाद बहुत सुहावना लगता है ग्रैंट साहिब अपने टट्टू पर मुझे उसमें से लेचले और हम लोगों के नौकर चाकर अपने जूते और पायताबे उतारकर पार चले इस जगह से वह तंग राह क्रेगनागोआर की पहाडियों की जड़ तक बराबर घूमती गयी है उस तेज़ नदी के ऊपर चट्टानें लटक रही हैं बर्च और फ़र के पेड़ उनपर लगे हैं ज्यों २ आगे बढिये त्यों २ पहाड़ियां बहुत ढालुआं दोनों तरफ़ ऊंची होती गई हैं बड़ी चट्टानें और पत्थर के टीले बहुत से हैं और कहीं २ ताल बहुत ऊंचे पर से बहते हैं और राह क्रम २ ऊंची होती हुई घूमकर गई है । यह जगह बहुत आलीशान है ॥

जब बराबर जगह पर पेड़ों के बीच में हम लोग आये तो ठहर गये । उस जगह के फ़र के पेड़ विशेष कर शोभायमान हैं और सब के सब निहायत बड़े हैं । इस मनोहर जगह में दो बजे कुछ जलपान किया फिर आगे चले थोड़ी दूर जहां कि गुफा और दरी चौड़ी है और जहां घासपात बहुत लगी है थोड़ी दूर पैदल चले । फिर टट्टुओं पर सवार होकर फिसी के पार (फिसी एक नदी है जिस में से दिन को कई बार

हम लोग हलकर गये) उस जगह पर उतरे जहां अति मनोहर फर के वृक्ष अति सुंदर स्थान में लगे हैं। तब हम लोग एक अति मनोहर स्थान में पहुंचे यह जगह सब जगहों से अच्छी है और यहां लकड़ी की ओर टर्फ़ की झोपड़ियों की छावनी है बेडफ़ोर्ड की अमीरज़ादी ने इसे बनवाया था। अब उस ख़ांदान से इससे कुछ इलाक़ा नहीं है और अफ़सोस है कि सब गिरकर अच्छे २ फ़र के वृक्षों के नीचे उजाड़ होता जाता है गुफा के अगलबगल बड़े २ पहाड़ निकलते आते हैं। इसकी सुंदरता देखकर हम लोग अति मोहित होगये फिसी नदी के मुहाने से यह जगह सात मील के लगभग दूर है। उस जंगल से निकलकर हम लोग एक अच्छी राह पर पहुंचे बाईं ओर सुंदर हीदर के रंग की छोटी २ पहाडियां थीं जो दहिने तरफ़ थी ऊंची ओर दरख़तों से भरी थी ओर नाले ओर सोते अच्छे २ बह रहे थे ज्योंही हम लोग उस जंगल के बाहर आये लार्ड ओर लेडी एलेकज़ेंडर रसल से एक छोटे मकान में मुलाक़ात हुई ओर उनसे कुछ बात चीत हुई इस जगह के जहां वे आगे रहते थे उजाड़ होजाने से निहायत रंज है ओर अब उनसे कुछ इलाक़ा नहीं है। हम लोग बहुत दूर तक याने १२ मील सवार होकर चले यहां तक कि स्पे नदी के घाट पर पहुंचे। जंगलों में हिरन हांके जाते थे ओर आवाज़ बन्दूक़ की सुन पड़ती थी। हम लोगों ने स्पे नदी के किनारे ख़ूबसूरत पहाड़ियां देखीं ओर बाईं ओर लागन झील की ओर जो थीं उन्हें भी देखीं। फिर हम लोग लार्च के जंगल के पास पहुंचे वहां से खेत मे आये हम लोगों के दाहिनी ओर किनरारा था यहां से गोर्डन के ड्यूक की क़बर एक पहाड़ी पर साफ़ दिखलाई देती है उसका रंग हीदर के सबब बहुत सुर्ख़ है॥

लार्च जंगल के भीतर जाने के पहले लार्ड एलेकज़ेंडर रसल फिर एक छोटी सी टट्टू की गाड़ी पर बिठाकर उसी तरह ले चले और हम लोगों से हर एक चीज़ों का बयान करते जाते थे । उसने डूक आफ़ आर्गैल के क़बर को हम लोगों को दिखलाया हम लोगों के दाहिनी ओर एक पहाड़ी की चोटी पर टीले के मानन्द है । इसके मशहूर होने का सबब यह देखपड़ता है कि मार्क्विस आफ़ आर्गैल ने अपनी फ़ौज के साथ यहीं मुक़ाम किया था ॥

फिर हमलोग एक दूसरे लार्च के जंगल के पास पहुंचे मैं और लेडी चर्चिल अपने २ टट्टुओं पर से उतर पड़ीं क्योंकि बहुत देर तक सवारी करने के सबब से हम लोगों का बदन बहुत जकड़गया था इस जंगल की सरहद्द के पार होकर हम लोग इंच झील के पास आये यह झील बड़ी सुहावनी है और मैं ने इसका नक़शा खीचने को बहुत चाहा लेकिन हमलोगों को जल्दी थी और फ़ुरसत भी न थी । रोशनी बहुत अच्छी लगती थी और कुछ चारपाये सबज़े के तंग टुकड़े के पार होकरके हम लोगों के बहुत नज़दीक झील के कनारे पर पार आते जाते थे सचमुच इसको देखकर मनमोहित होजाता था यह जंगली झील नहीं है बलकि इसके बरख़िलाफ़ है ऊंची चट्टानें वहां नहीं हैं जंगल और नीली पहाड़ियां उसके पीछे हैं । यहां से एक मील के तफ़ावत पर घाट है इस जगह हम लोग अपने टट्टुओं से जुदा हुए केवल ग्रांट और ब्रौन साहिब हम लोगों के साथ चले आये वाकर साहिब पुलीस के इंस्पेक्टर से हम लोगों से मुलाक़ात हुई पर वे हम लोगों के साथ नहीं रहे । वे राह में हरएक चीज़ दुरुस्त रहने के लिये भेजेगये थे लोगों को यह बात न मालूम हुई कि हम लोग कौन हैं इसका बंदोबस्त उन्होंने बहुत अच्छी तरह

किया नाव बहुत भट्ठी थी हम लोग सिर्फ़ उसपर खड़े हो सके एक तरफ़ दो लंबे डाड़ों से खेई गई एक को मल्लाह खेता था और दूसरे को ब्रोन खेते थे



और दूसरी तरफ एक लंबे डांड़ से ग्रेंट साहिब अपने हाथ से खेते थे। चंद लमहे में हम लोगों को रस्ते के ऊपर लाये वहां पर दो ख़राब गाड़ियां थीं एक पर आलबर्ट और हम चढ़े और दूसरी पर लेडी चर्चिल और जर्नैल ग्रे सवार हुए हर एक में छोटे और मिरचुक घोड़े बाते थे कोचबाक्स पर से एक आदमी हांकता था ग्रेंट साहिब हम लोगों की गाड़ियों पर और ब्रोन साहिब दूसरी गाड़ी पर थे। हम लोग ४० मील चले २० मील घोड़े पर और २० मील गाड़ी पर हम लोगों ने अपना नाम लार्ड और लेडी चर्चिल रक्खा और लेडी चर्चिल का नाम मिस स्पेन्सर और जर्नैल ग्रे का नाम डाकटर ग्रे रक्खा। एक बार ब्रोन साहिब इस बात को भूल गये और जब मैं गाड़ी पर चढ़ती थी महारानी कहके पुकारा और ग्रेंट साहिब ने कोचबाक्स पर से महाराज कह करके आलबर्ट को पुकारा यह सुनकर हम लोग हसने लगे लेकिन किसी ने नहीं समझा। हम लोग बराबर ३ घंटे सवार रहे जब गाड़ी में पहुंचे ६ बजा। जल्द जंगल के बाहर निकले और क़िनरारा के नज़दीक होते हुए बेड ताक रस्ते के पास आ गये उसमें से होकर हम को आना उचित था लेकिन नहीं आये॥

जंगलदार पहाड़ियों की ऊंची कारनगार्म श्रेणी के और बेनमूइक ढूई के सबब से यह निहायत ख़ूबसूरत मालूम पड़ता था लेकिन दुर्दसा यह थी कि चोटी इसकी कुहिरे के कारन बहुत अंधेरी थी वह चोड़ी स्पे नदी दरी में से होकर जोते हुए खेतों में से होकर अच्छे २ पेड़ों के नीचे बहती है । हम लोग एक छोटी सीढ़ी के ऊपर चढ़गये और उसकी चोटी पर हम लोगों ने अपने सोने का कमरा देखा बहुत छोटा था लेकिन साफ़ था एक बड़ा सा पलंग था उस्से सारा कमरा भरा सा दिखलाई देता था उसके सामने बैठने और खाने का अच्छा कमरा था इसके बाद वह कमरा था जहां आलबर्ट कपड़ा पहिनते थे दो सहेलियों में (जेन शेकल* मेरे साथ थी) दूसरी रस्ते से छकड़े में गई थी उनको स्टुवार्ट साहिब हांकते थे । हम लोगों ने कपड़ा बदला और खाना खाने के लिये बैठे ग्रेंट और ब्रोन को हम लोगों के पास रहना था लेकिन लज्जा के कारन न रहे एक स्त्री ने सब काम किया और जब खाना होचुका और दस्तर-ख़ान बढ़ाया गया शराब का बोतल (हम लोगों का निज जो हम लोग लाये थे) गिलासों के साथ मेज़ पर रक्खा गया यह पुराना अंगरेज़ी दस्तूर था खाना बहुत अच्छा हुआ सब चीज़ें बहुत साफ़ थीं शोरबा और तरकारी मिली भेड़ी के गोश्त का शोरबा मैं ने खूब पसंद न किया मुर्ग़ाबी और खसी का कबाब और बहुत अच्छे २ आलू खाने में आये सिवाय इनके दो एक रक़म के और खाने थे उनको मैं ने नहीं चखा और अचार एकआध रक़म के अच्छे थे । खाना खाने के बाद इसका कुछ हाल लिखने को मैं ने कुछ कोशिस की लेकिन लोगों की बातचीत से

---

* हमारे तोशाख़ाने की बीबियों में से एक थी वह उस नौकर की बेटी थी जिसकी चर्चा आगे हो चुकी है ॥

मेरा दिल घबरा गया उस वक्त अलबर्ट चुपचाप रहे तब दरबारी पोशाक उतार दीया और साढ़े ग्यारह बजे के क़रीब हम लोग पलंग पर गये ॥

बुध सितंबर ५ ॥

फ़जर को पानी और कुहिरा पड़रहा था । रात को अच्छी तरह नहीं सोये कुछ सबेरे हम लोग उठे और बैठक में पढ़ने और काम करने लगे इसमें हाज़िरी तयार हुई इसके लिये कुछ देर इंतिज़ार करना पड़ा था । ख़ासी चाह रोटी और मक्खन और कुछ शोरबा खाने पीने में आया । जेन शेकल ने (जो बहुत काम की और मुसतैद थी) कहा कि हम सभों ने याने दो सहेलियां, ग्रेंट ब्रोन स्टुवार्ट और वाकर इकट्ठा खाना खाया है और असबाब के कमरे बहुत कुशादा थे । लोग हम लोगों के इर्द गिर्द दिलबहलाव की बातें कर रहे थे । औरत भीतर आई वे लोग अपने खाने पर थे और ग्रेंट साहिब से कहा कि डाकटर ग्रे तुमको बुलाते हैं इससे सब लोग हसने लगे । तब उन्होंने जेन से कहा कि तुम्हारे मालिक कुछ तकलीफ़ नहीं देते और सबेरे ग्रेंट ने जेन्नू के पास जाकर कहा कि लाट साहिब मुझे तलाश करते थे ॥

हर कोई गली में हमारी खिड़की पर से देखसक्ता वह गली बहुत लंबी और चोड़ी थी मकान जुदे २ थे बहुत सुनसान रहता कोई उधर से आता जाता न था केवल एक आदमी इधर उधर गाड़ी हांकता था और एक लड़का ख़बर लेजाता था । जर्नैल ग्रे साहिब ने एक घड़ी एक दूकान में २० रुपये की अपने लिये ख़रीदी ॥

अंत को जब १० बजने को २० मिनिट बाक़ी था हम लोग उन्हीं गाड़ियों पर सवार हुए और जिधर से कल्ह गये थे उधर से चले कासलग्रेंट तक गाड़ी पर गये यह जगह लार्ड सीफ़ील्ड की है यह बहुत

अच्छा रमना है एक बहुत ख़ूबसूरत मकान शहर से २ मील पर मानन्द कोठी के है । तमाम वक्त झंसी पड़ती थी। हम लोग गाड़ी से नहीं उतरे लेकिन पीछे फिर यांट टोन में से होकरके चले वहां पर ख़ून होगया था लोग सब गली में जमा थे और वहां की मलनिनी अपने रुमाल को हिलाती थी और वह औरत खिर्की पर से एक झंडा हिलाती थी। हमारे कोचवान ने कुछ न समझा बूझा जब हम लोग दाहिनी ओर जंगल में से फिरकर शहर में से चले हमको शहर में आते बहुत से लोग मिले तब कोचवान ने कहा कि लोग किसी के दफ़न करने के लिये जमा हैं। हम लोग स्पे के पुलपर से स्पे नदी के पार हुए। पानी बड़े ज़ोर से बरसता था पहाड़ियों पर कुहिरा बहुत पड़रहा था यह बहुत ऊंचा न था हीदर के सबब सब पहाड़ियां सुनहरी दिखलाई देती थीं। हम लोग अपनी गाड़ी पर चमड़े का टप डालने के लिये ठहर गये ऐसे समय में टप डालने का सब लोगों का दस्तूर है इससे मेंह से बचाव होता है ॥

इस देश में पहिला अद्भुत पदार्थ डालठू की घाटी है जिसपर से रस्ता फिरा है और हरी २ पहाड़ियां हैं। हम लोग एक छोटी सरा में ठहरे उसके नज़दीक सिर्फ़ एक दूसरा मकान था यहां बिचारे घोड़ों ने पानी पाया और क़रीब १० मिनिट के इंतिज़ारी करना पड़ा। आगे एक बहुत ढालुआं पहाड़ी के पास और भी एक क़िसम की घाटी के पास जिसे ग्लेन ब्रूहन कहते हैं आये पहाड़ियां हरी हैं और सूरत उनकी स्लेट सी है। यहां पर हमलोग उतरे और पहाड़ी तक ब्रूइन के पुल के ऊपर होकर पैदल चले और कुछ दूर एक दूसरी पहाड़ी पर गये यहां रस्ता ऊपर और नीचे उस पहाड़ी के अजब तरह से घूम के गया है। हम लोग तब एवन नदी के सामने आये जो घूमकर पहाड़ियों के नीचे

वही है फिर एवन के पुल के सामने एक छोटे से जंगल में उतरे वह नदी बहुत सुंदर और निर्मल है। फिर हम लोग अपनी २ गाड़ियों पर चढ़े (लेडी चर्चिल और मैं कुछ देर तक साथ रहीं) और १ मील के क़रीब आगे एक पहाड़ी पर टामिनटौल तक गाड़ी पर गये घोड़े बेचारे बहुत मुशकिल से गाड़ियों को खींच सक्ते थे कोचवान उन्हें चाबुक से मारता था और सीटी बजाता था कि वे आगे चलें पर वे न चलसक्ते थे मैं हर लमहे ख़याल करती थी कि इस गांव में घोड़े ठहर जांयगे। चार घंटे हम लोगों को इस १४ मील जाने में लगे दो बजे शहर के बाहर हम लोग पहुंचे गाड़ी पर से उतर करके टट्टूओं पर सवार हुए टामिनटौल उजाड़ होगया है देखने में ऐसी वीरान जगह नहीं आई है उसमें एक लंबी गली है जिसमें ३ सराय हैं मकान और लोग वहां के निहायत मैले हैं इर्द गिर्द भी उसके निहायत उजाड़ और वीराना देख पड़ता है। ग्रेंट साहिब मुझसे कहने लगे कि तमाम हैलेंड में यह जगह निहायत मैली और उजाड़ है॥

शहर के बाहर थोड़ी दूर जाकर हम लोग अपने टट्टूओं पर सवार हुए लेकिन सिर्फ़ चंद लम्हे सवार होकरके चले क्योंकि दो बज गया था। हम लोग एक सुंदर जगह में आगये वहां से नीचे एवन नदी और ऊपर एक सुंदर कंदरा देखपड़ती थी वहां पर ठहर कर कुछ हम लोगों ने जलपान किया जब ब्रोन हमारी चीज़ों को खोलकर तरकीब से रखता था मैं ने उससे और ग्रांट से कहा कि कौन मदद कररहा है और मैं ने पूछा कि कल्ह रात को खाने के वक़्त और हाज़िरी के वक़्त हम लोगों के पास क्यों न रहे ब्रोन ने जवाब दिया कि मुझको डर था कि यह काम मुझसे न होसकेगा। मैं ने जवाब दिया कि कमरे में कोई अजनबी हरगिज़ न आवे और दूसरे वक़्त भी उनको आना न चाहिये॥

जो खाने पीने की चीज़ें हम लोग अपने साथ कल्ह घर से लाये थे सब तमाम होगईं हम लोग फिर चले कुछ दूर पैदल चले इस अर्से में आदमी लोग और टट्टू आगये तब ग्वन नदी के कनारे बराबर सवार होकर चले रस्ता गुफा के जड़ के पास फिरकर गया है कहीं २ कुछ चौड़ा है लेकिन मोड़ पर तंग होता गया है और इंक्रोरी की तरह घूम कर गया है उस जगह में इसे ग्लेन ग्वन कहते हैं पहाड़ियां नदी की तरफ़ झुकी हुई हैं और बहुत हरी और सुंदर हैं । रस्ते में कीचड़ की तकलीफ़ थी और बहुत जगह राह ढालुआं और नीची थी आख़िर को फिर अच्छी राह पर पहुंचे । देर होने लगी और हम लोगों को ८ मील सवारी पर जाना था इसलिये ब्रोन और दो शख़्स दूसरे हम लोगों के आगे २ बहुत जल्द दौड़ते चले चुनांचि हम लोगों ने भी उनके बराबर पहुंचने के लिये घोड़ों को दुलकी चलाया । ग्रंट अकसर हिरन नाम टट्टू पर सवार होकर जाता था लेकिन दूसरे लोग दो रोज़ की लंबी मंज़िल के सबब बहुत थके दिखलाई देते थे आलबर्ट के या जर्नैल साहिब के टट्टू पर चढ़ने को बहुत ख़ुश थे इसलिये कि उनको कुछ आराम मिले उनकी मुस्तैदी से तयार रहने से ख़ुशी से और न थकने से बड़ा अचरज होता था और इन बातों के सबब वे निहायत अच्छे नौकर हैं । ग्रंट और ब्रोन ये लोग बड़े पक्के होशयार ख़बरदार अक़लमंद और मुस्तैद नौकर हैं जो कुछ इनसे कहाजाता तुरंत करने को तयार होजाते हैं ख़ास करके ब्रोन हर एक चीज़ करने को तयार रहता और कैसाही मुश-किल काम हो उसे करडालता यह हमारे अच्छे २ नौकरों में से एक है । हम लोग इंक्रोरी में से होकर चले जब नज़दीक आये दो उड़ते उक़ाब को देखा कि पहाड़ी की चोटी पर उतरते हैं । इंक्रोरी से बूलिक झील की

तरफ़ चले सूर्यास्त होने के कारण वह खूबसूरत देखपड़ता था। टामिन टोन से जब चले तो मेह से बिलकुल बचाव हुआ सिर्फ थोड़ी झींसी जबतब पड़जाती थी। झूलिक झील पर हमारी गाड़ी और ४ टट्टू मिले और जिसतरह से कल्ह फ़जर चले थे उसीतरह सवार होकर पीछे चले साढ़े सात बजे कुशलक्षेम से बालमेरल में पहुंचे॥

क्या अच्छी और खुशी से सैर हुई प्यारी लेडी चर्चिल दस्तूर के मुवाफ़िक़ निहायत मुहब्बत करती और खुश रहती और हर एक चीज़ करने को तयार थी। वह और जर्नैल दोनो बड़ी खुशी से उसके भीतर गये और हमारे लोग भी उसीतरफ़ गये। ये सब बातें प्यारे आलबर्ट के सबब हासिल हुईं क्योंकि वे हमेशा सोचते कि ऐसा करने में खुशी होगी इसलिये वे खुद अगले दिनों मे इसीतरह की बहुतेरी सैर कर चुके थे और बड़ी खुशी हासिल की थी। वहां हम लोगो के सुनने में आया कि भेद खुलगया एक आदमी ने आलबर्ट को गली में कल्ह फज़र को पहचान लिया तब आलबर्ट ने टमटम पर सवार होकर ऐसा किया कि लोगों ने समझा कि कोई शख़्स बालमेरल का है उन लोगों को कभी संदेह न हुआ कि हम लोग हैं मैं अपनी उंगलियों में बहुत सी सोने की अंगूठियां पहिने थी उस औरत ने जाना कि कोई बड़ी अमीरज़ादी है मैंने लेडी चर्चिल से कहा कि तुम मुझसे अधिक पहिने हो जब उन्हों ने सुना कि मैं कौन हूं वे बड़े अचंभे में हुईं और डर गईं इसमें हमारा जीलगाव बहुत नहीं हुआ लेकिन यह सैर भूलने लाइक़ नहीं है इसका स्मरण आनंद के साथ सदा रहेगा हम लोगों के टट्टू प्रशंसा के योग्य हैं जैसा मेरा प्यारा फेवी अच्छा है वैसही आलबर्ट का है॥

डूनवरमार्क के और फेटर के टीले पर दूसरी बड़ी सैर का हाल ।

शुक्र सितम्बर २० सन् १८६१ ॥

सात बजे हवा और पानी की तरफ चिंता से मैं देखरही थी कुछ पानी बरस गया था कुहिरा पहाड़ियों पर छा रहा था और मेह के बरसने का उसवास था । आलबर्ट ने कहा कि बेहतर होगा कि हम लोग पहिलीबार की तरह बंदोबस्त करें चुनांचि हम लोग सबेरे उठे आठ बजे सूरज निकला और कुहिरा हर एक जगह में कम होने लगा । साढ़े आठ बजे हम लोगों ने हाज़िरी खाई और साढ़े नौ बजे दो गाड़ियों पर सवार होकर चले आलिस और लूई * हम लोगों के साथ पहिली गाड़ी में थे और ग्रैंट कोचवाक्स पर था । लेडी चर्चिल और जर्नैल ग्रे दूसरी गाड़ी में बैठे और ब्रोन उनके कोचवाक्स पर बैठा । हम लोग मूइक के पुलतक सवारी पर गये वहां हमारे छ टट्टू और पांच हैलैंडी नौकर मिले (अर्थात जे स्मिथ जे मार्गन केनडी सी स्टुवार्ट और एस केम्पबिल) पोलाक की पहाड़ी के ऊपर घसीली रस्ते तक हम लोग गये और उसके नीचे ४ मील के लगभग गये तब एक बहुत साफ जगह में आगये और बहुत खबरदारी करके दलदल से बचे मैं तमाम वक्त अपने टट्टू पर थी आलबर्ट और लूई उतरकर २०० गज के लगभग चले । लाकनागार की पहाड़ियों पर बहुत घास पात जमी थी लेकिन कीन पहाड़ बहुत भला मालूम होता था जब हम लोग कोरी ब्रुआक की कंदरा के पास नीचे आये और टानरकंदरा की ओर देखा तो बहुत भयानक मालूम पड़ा

* हेसी प्रिन्स लूई ॥

कीन पहाड़ अजीब गावदुम सूरत का है करीब ३२०० फुट ऊंचा है टानर झील के पार होने के बाद हम लोगों को बहुत दूरतक ढालुआं ज़मीन पर चढ़ना पड़ा। मूइक के पुल से कोरी ब्रुआच तक साढ़े ६ मील है॥

जब हम लोग फिर पटपर ज़मीन पर पहुंचे ज़मीन सूखी और कड़ी थी हम लोग उतरकर उस पहाड़ी पर पैदल चले। हम लोग दूर नहीं गये थे कि लार्ड डेलहौसी से जो टट्टू पर चढ़े थे मुलाकात हुई (जिनसे जर्नैल ग्रे साहिब हम लोगों के आने की खबर कर चुके थे)। उन्हों ने टट्टू से उतरकर किनारे पर हम लोगों का इस्तकबाल किया और हम लोगों के साथ पैदल चले। कुछ देर तक टहलने के बाद आलिस और हम अपने २ टट्टुओं पर सवार हुए (आलबर्ट थोड़ी देर तक सवार होकर चले थे) फिर बायीं तरफ हम लोग मुड़े इसमें एक नया देश नज़र पड़ा उधर देखा तो क्या बहुत अच्छा मार्क का दरा है। हम लोग एक बहुत ढालुआं और घुमाव के रस्ते से जिसे लेडर कहते हैं उतरे यह बहुत बड़ा और भयानक है पानी उसमें से बहता है उसे लेडरबर्न कहते हैं सचमुच यह बहुत अच्छा और अद्भुत प्रकार का है। उसकी जड़ के पास एक छोटा सा एक जंगली का मकान है। रस्ता बहुत सकेता है वहां बहुत ढालुए और खिड़बिड़ही रस्ते पर घूम कर जाना होता है लेकिन उसपर घोड़े पर चढ़कर जाना बहुत सहल है क्योंकि वह रस्ता बहुत टेढ़ी गयी है। हम लोग उस नाले के पार हुए वहां बहुत से गड़ेड़िये कतार बांधे बैठे थे खास करके औरतें थीं उनमें से बूढ़े लोग हुक्का पी रहे थे। ये लोग दक्खिन से उत्तर को जहां से आये थे फिरते जाते थे। हम लोग उस छोटी झोपड़ी के पास गये और एक खासी हैलेंडीय तहख़ाने के कमरे में चोकी पर बैठकर कुछ

जलपान किया । इस जगह को इनवरमार्क कहते हैं और कोरी ब्रूआक से ४ मील पर है । जलपान करने के बाद हमने उसका नक़शा खैंचलिया । उस ढालुआं पहाड़ी को जिसके नीचे हम लोग आये जो गड़ेड़िये के मकान के सामने है क्रेगबोस्टाग कहते हैं वहां एक घेरी हुई पहाड़ी थी जिसपर बहुत से पत्थर के टीले जा बजा थे बाईं तरफ उठी हुई थी उसके नीचे एक भयानक कंदरा है उसका नाम डोन पहाड़ी है ॥

हम लोग तीन बजने के थोड़ा बाद अपने २ टट्टुओं पर सवार होकर मार्कदरा के नीचे गये और एक बहुत साफ कुएं में से कुछ पानी पीने के लिये ठहरे उस कुएं का नाम धवल कूप है मार्क का दरा कई बार नांघना पड़ा । ज्यों २ हम लोग ली झील के स्थान के पास आये त्यों २ वह दरा चौड़ा होता आया और इनवरमार्क का गढ़ अच्छी तरह सामने नज़र पड़ा उसके चारों तरफ जंगल और अनाज के खेत थे जो लोग इनमें भेंड़ी का बाल कतरते थे बहुत खूबसूरत देखपड़े । हम लोग दाहिनी तरफ को मुड़े और उस पुराने उजाड़ गढ़ के पास गये उसके आधे पर लता फैली है । इसके बाद हम लोग लार्ड डेलहौसी के शिकारगाह में गये वहां पर घोड़ों से उतर गये वह नया और बहुत खूबसूरत मकान है पत्थर का बना है मकान की कुर्सी बहुत अच्छी है वहां से दरा नज़र पड़ता है उसके पीछे जंगलदार पहाड़ियां हैं मिस माल (जिसे अब लेडी सी माल कहते हैं) वहां थीं । हम लोग बैठक में से होकरके कुछ दूर पैदल रौस पर टहले वहां से ली झील देखपड़ती है यह झील भयानक है लेकिन बहुत बड़ी नहीं है उसके नज़दीक पहाड़ और खलिहान और चंद झोपड़ियां उसके किनारे पर हैं । दालान और खाना खाने का कमरा अच्छी तसबीरों से सजा हुआ है उसकी

दिवारों पर आईने जड़े हैं और बवर उनपर फैली हैं। पहाड़ियों के लगभग जो बादल घूम रहे थे उनमें से कुछ पानी बरसा। तब हम लोग अपनी गाड़ियों पर चढ़े जिस गाड़ी पर हम लोग चढ़े थे वह दुहरी टमटम के किस्म की थी उसपर आठ आदमी बैठ सक्ते थे लेकिन भीतर बहुत सकेता था। हम लोग नार्थेस्क की राह से उस दरा के नीची होकर गये (ये और मार्क मिलके नार्थेस्क है) उस दरा के बराबर और दाहिनी तरफ एक बहुत ख़ूबसूरत दूसरी दरा में से होकर ईफाक दर में गाड़ी पर गये वहां बहुत से पेड़ थे और सारी ज़मीन बहुत ख़ूबसूरत और रोशन थी। सामने हम लोगों के रोशनी और उजाला था लेकिन पीछे कुहिरा और मेह पहाड़ के ऊपर बरसता था॥

इसके आगे हम लोग पौलस्कीनी पुल और टर्फ पुल के पार गये ये दोनो पुल ढालुआं और ऊंचे हैं। पिछले पुल के दाहिनी तरफ एक नया आज़ाद गिरिजा है उसके आगे कपतान क्लिम्स साहिब का सैरगाह है यह अद्भुत प्रकार का है बाईं ओर मिलडेन है और एक छोटी सी ऊंची जगह पर आकमिल का किला है अब वह एक पुराने खलिहान के मानिन्द होगया है और वहां चबूतरेदार बगीचे की निशानियां अब तक बाकी हैं। उसके गिर्द पहाड़ियां और उस रस्ते के नज़दीक बाईं ओर छोटे २ ढूहे हैं। थोड़ी दूर आगे फिर हम लोगों को जंगल मिला वहां हम लोग गाड़ी से उतरकर मेजर मेकिनराय के नाले तक पैदल चले। ठीक इस बड़ी अद्भुत सकेती घाटी के ऊपर वह राह जंगल में से घूमकर गयी इसके समान कोई दूसरी घाटी नहीं है चट्टानें अजीब किस्म की हैं और नाले बहुत सकेते हैं यहां पर गहिरे २ सरोवर हैं उनपर पेड़ों की डालियां लटक रही हैं यह राह कुछ दूर तक चली गयी है ऐसे जंगल

और स्थान वेल्स में या हाथार्नेडन में होसक्ते हैं । हम लोग जंगल में से और थोड़ी दूर उस रस्ते पर से पैदल चले इस बीच में गाड़ियां हम लोगों के पास आगई । तीन मील फेटरकेर्न तक आगे सवार होकर हम लोग गये सब मिलकर बालमोरल से ४० मील हुआ । हम लोग एक पटपर देश में आये बहुत सी जगह वहां सचमुच जोतीबोई थीं लेकिन अंधेरा ऐसा था कि कुछ देखने में न आया ॥

सवा सात बजे हम लोग उस छोटे कसबे में याने फेटरकेर्न गांव में पहुंचे आबादी बहुत कम है यहां तक कि कोई आता जाता न था । हम लोग एक छोटी सी सरांय में जिसे रामसेआर्म्स कहते हैं उतरे किसी ने हम लोगों को न देखा सीढ़ी पर एकबारगी चढ़गये । वहां एक बहुत अच्छा बैठका था उसी के पास एक खाना खाने का कमरा था दोनो बहुत साफ और सुथरे थे उसके बाईं ओर हम लोगों के सोने का कमरा था यह बहुत छोटा था लेकिन बहुत साफ और अच्छा था ग्रानटौन की निसबत यह बहुत अच्छा सजा था । आलिस का कमरा अच्छा था लेकिन जगह उसमें हम लोगों के कमरे के बराबर थी । इसके बाद छोटा सा कमरा था उसमें एक पलंग थी और उसी में आलबर्ट कपड़ा बदलते थे इसके उधर लेडी चर्चिल के सोने का कमरा था । लूइस और जनैल ग्रे के कमरे होटेल में थे उसे टेंपरेन्स होटल कहते हैं । आठ बजे हम लोगों ने खाना खाया खाने की चीज़ें बहुत नफ़ीस और मज़ेदार थीं । ग्रेंट और ब्रौन वहां हाज़िर थे ये कुछ थके मांदे थे लेकिन जनैल ग्रे और लेडी चर्चिल परोसती थीं और उनको सिर्फ रेकाबी बदलना पड़ता था इसे ब्रौन तुरंत करदेता था । उस मकान में से एक छोटी लड़की मदद करने के लिये आई लेकिन ग्रेंट ने उसे बिदा करदिया इसलिये

कि वह हम लोगों को न देखे वे ज़मीदार और ज़मीदारिन को जानते थे लेकिन कोचवान के सिवाय और कोई न जानता था इस भेद को लोगों ने अजब तरह से छिपाया ॥

शाम को साफ़ था और चांदनी छिटकी थी हम सब लोग बाहर आये और गांव भर में पैदल घूमे कोई शख़्स उस जगह में नज़र नहीं आया उस गावं के बीच में एक तरह का खंभा था चांदनी की रोशनी में लूइस ने एक इश्तिहार जो खेरात जमा करने के लिये उसपर खुदा था पढ़ा। हम लोग थोड़ी दूर एक गली में सैर करते चले वहां कुछ भी सुनने में न आया एक पत्ती तक न हिलती थी लेकिन दूर से एक कुत्ते के भुंकने की आवाज़ सुनपड़ी फिर अचानक ढोल और बांसुली की सुनपड़ी। हम लोग चिहुंक पड़े और डरे कि लोगों ने हमे पहचाना लेकिन लूइस और जर्नैल ग्रे साहिब ने जो पीछे गये थे कुछ भी न देखा। जब हम लोग धीमे २ फिरे आते थे अकसर आवाज़ सुनाई देती थी जब हम लोग सराय के दरावाज़े के पास पहुंचे तो ठहर गये और देखा कि छ आदमी बांसुरी और तंबूर लिये चले आते (कोई शख़्स उनकी खबर न लेता था) गली के नीचे आते और फिर पीछे जाते ग्रेन्ट और ब्रौन बाहर गये थे लेकिन किसी ने नहीं समझा यह क्या है। आलबर्ट ने उस छोटी लौंडी से इसका हाल पूंछा उसने जवाब दिया कि ये बाजेवाले हैं हफते में दो बार इसी तरह इधर उधर घूमते और बजाते हैं। मुझे आश्चर्य हुआ। कुछ देर तक हम लोगों के घर पर पहुंचने के बाद वह बाजा बजता रहा। हम लोग साढ़े दस बजे तक जागते और कुछ काम करते रहे और आलबर्ट पढ़ते थे इसके बाद पलंग पर गये ॥

सनीचर सितंम्बर २१ ॥

हम लोग दो तीन बजे जाग उठे उस सबेरे के समय बहुत सुनसान और कुहिरा और कुछ मेह पड़ रहा था कोई आता जाता न था लेकिन कुछ लोग अपने धंधे में लगे थे । एक मुसाफिर रात को आया था और चाहा कि खानें के कमरे में ठहरे वह कमरा सौदागरीवाले मुसाफिरों के लिये बना था । लेकिन लोगों ने उससे कहा कि तुम यहां नहीं उतर सक्ते ग्रैन्ट और ब्रौन के साथ उसने चाह पिया और उनसे पूछा कि यहां क्या हो रहा है ग्रैन्ट ने उत्तर दिया कि एबरडन के किसी मनुष्य का बिबाह है । टेंपरेन्स होटल के लोग बहुत जानने की फिक्र में थे कि यहां कौन लोग हैं । जर्नैल ग्रे साहिब के सिवाय सभों ने नव बजने के थोड़ा पहिले हाज़िरी खाई । ब्रौन हमारा काम करता था हमारे कपड़े और जूतियां साफ़ करता और जहां कहीं मैं खबर भेजती लेजाता और ग्रैन्ट आलबर्ट का काम करता था ॥

पवने दस बजे हम लोग उसी राह से जिधर से पहिले आये थे चले लेकिन उस राह को छोड़ दिया जिधर से लेडी चर्चिल और जर्नैल साहिब कल्ह गये थे दुर्भाग्य से कुहिरा ऐसा पड़ता था कि दूर की चीज़ न देख सक्ते थे । लोगों ने हम लोगों को पहिचाना कुछ लोग हम लोगों के जाते समय आशीर्वाद देने लगे । हम फेटरकेर्न के पास सर जे फर्बेस के मकान के समीप होकर गये बाईं ओर आगे फास्क में आये यह जगह सर टी ग्लेडस्टन की है इसने उस देश की भलाई के लिये बहुत से छोटे २ अच्छे मकानात बनवा दिये हैं । इसके बाद हम लोग एक बड़ी लंबी पहाड़ी के पास पहुंचे यह पहाड़ी बारह मील की लंबी है लोग इसे कारनी मन्थ कहते हैं उसपर से चीज़ें बहुत अच्छी दिखा-

लाई देती हैं लेकिन बहुत कुहिरा पड़ने के कारण अति अंधेरा होगया था। कुछ दूर उसपर हम लोग पैदल चले फिर थोड़ी देर तक आलिस और मैं गाड़ी में अकेली बैठी रही। इसके बाद स्पिटिन पुल पर हम लोग आये यह बहुत ऊंचा पुल है बाईं ओर डे नदी और दाहिनी ओर स्पिटिंग का नाला बहता है। डे के पुल पास सर टी ग्लाडस्टन साहिब का शिकारगाह है यहां पर हम सभों ने गाड़ियों को बदला और दोहरी टमटम पर चढ़े हम और आलबर्ट भीतर थे और लूइस पीछे बैठी थी। फिर हम लोग एक पहाड़ी के ऊपर आये और वायव्य कोण में सर टी ग्लाडस्टन साहिब के शिकारगाह के नज़दीक बाटक पहाड़ को देखा। यहां से अगर कोई चले तो एक खुले मैदान में आय जायगा और वहां से आबरडन और एक लंबा चौड़ा मैदान देख पड़ेगा और एक बहुत गहिरा हलाव वहां है वहां फे के पार होकर एक जगह में पहुंचेगा जिसे सफ़ेद पत्थर कहते हैं। यह बहुत सुंदर साफ़ जंगलदार दरा है करीब दो मील आगे वायव्य कोण में बाईं ओर फिनज़ीत है और उसके पार थोड़ी दूर पर डरडन बादशाह की कब्र का पत्थर है यह रास्ते के बगल में है और यह बड़ा भारी पत्थर है लेकिन इसका मुफ़स्सल हाल हम लोगों ने नहीं दरियाफ़्त किया। बाद इसके हम लोग मेरी के कुंये के पार गये उसके बाईं ओर बालोजी होस है यह देश नेकल साहिब की मिलकियत है। खेती और हर एक चीज़ वहां की अच्छी दिखलाई पड़ी और वह देश बहुत सुंदर है। हम लोग एक बहुत से छोटे गांव में उतरे (वहां घोड़ों ने कुछ पानी पिया क्योंकि वह मंजिल बहुत लंबी थी) और थोड़ी दूर रस्ते पर हम लोग पैदल चले। आलिस लेडीचर्चिल और मैं एक दर्ज़ी के मकान में गई यह बहुत सुथरा था

और उस मकान की मलकिनी ने बहुत ख़ातिर के सिवाय वहां रहने के लिये हम लोगों से कहा लेकिन किसी तरह से न पहचाना कि हम लोग कौन हैं ॥

फिर हम लोग आगे चले देखते जाते थे कि बादल का क्या रंग है थोड़ी देर के बाद बहुत साफ़ हो गया । लार्ड हंटली साहिब के जंगल को देखा वे पहाड़ियां भी नज़र पड़ीं जो एबायनी की राह से देख पड़ती हैं एबाइनी में जाने के बदले हम लोग बाईं ओर फिरे एबाइनी का पुल दाहिनी तरफ़ छूट गया (इसको हम लोगों ने पहिले नहीं देखा था) इसके थोड़ा उधर सब बस्तियों के बाहर हम लोगों को डाकवाले साहिब दूसरी गाड़ी लिये मिले फेटरकेर्न से यह जगह बाईस मील थी । हम लोग टिनार नदी के पार उतरे और बाईं तरफ़ नाटिर की घांटी से होकर गाड़ी चली ऊंचे पहाड़ों के बीच यह घांटी है और ख़ूब घने और हरे जंगल से शोभित है एक हिस्सा जंगल लार्ड हंटली का है छः मील के क़रीब जाकर ठहरे दो बज चुका था जलपान किया बादल और कुहिरा देख कर डर मालूम होता था लेकिन तो भी दिन अच्छा कटा जहां जलपान किया वह जगह बहुत रमणीक थी इस्के बाद थोड़ी दूर पैदल चल कर फेर हम लोग गाड़ियों पर सवार हुए और घांटी के छोर तक गए घांटी में एक बनरखे के मकान के पास ईटनाक मक़ाम में पेड़ों से दूर एक बहुत सन्नाटे की जगह है यहां पर हमारे टांघन मौजूद थे क़रीब चार बजने के था जब हम लोग पहुंचे एक अभागी पागल लड़की यहां पर आप से आ गई थी यह लेडी चरचिल् के बराबर लांबी थी लेकिन बहुत झुकी हुई और एक लड़के की तरह कपड़ा पहिने बाल कतरे हुए थी और अपने घुठनों को दोनों हाथों से समेटे हुए ज़मीन पर बैठी झूम रही थी फेर उठ कर हमारी तरफ़

चली जरनैल ग्रे बीच में आगए और वह उनकी तरफ़ झुकी और उनकी कुरती का दामन पकड़ने और जेबों में हाथ डालने लगी हम सब लोग हंस पड़े लेकिन हा! अफ़सोस की जगह थी एक बूढ़ा झपटा हुआ आया लेडी चरचिल् ने उस्से पूछा कि तुम इस बेचारी लड़की को जानते हो उसने कहा(हां यह मेरी लड़की है इस्के दमाग़ में खलल आ गया है यह कह कर उस्को जल्दी से ले गया ॥

कई सो क़दम हम लोग पैदल चले और ऊंची ज़मीन देख कर टांघन पर सवार हुए और कल्ह जहां से उतरे थे उसी पहाड़ को ते करते हुए चले दलदल पार होकर पोलाक पहाड़ पर आये कीन प्रर्वत आदि दूर के पहाड़ों पर कुहिरा था इस्से सरदी मालूम होने लगी घास और काई जमे हुए रास्ते * से मुइक के पुल् तक आते हुए मुइक और गेरन् और बल्लाटर की घांटियां बहुत भली मालूम होती थीं चलते हुए मैं नेक ग्रांट के साथ बातें करती जाती थी ॥

हमारी प्यारी मा आलबर्ट के लिये एक बड़ी सी उमदा गाड़ी छोड़ गई थीं वह हम लोगों को घर ले जाने के लिये यहां मोजूद थी इसे देख कर मुझे बड़ा खेद हुआ और मेरी आंखों में आंसू भर आये हा ऐसी खुशी में यह रंज! लेकिन घर से इतनी दूर होने और नए और रमणीक स्थानों के देखने से तबीयत बहलती रही ॥

---

* मई सन् १८६२ ईसवी में ग्रांट ने मुझ से कहा कि जब प्रिन्स हमारे साथ पीछे रह गए थे इस फेरवट की जगह को देख कर उन्हों ने तजबीज़ किया था कि शाहज़ादा वेल्स के लिये हरिन् का रमना यहां तयार होना चाहिये और मुइक् की खाढ़ी में पेड़ बैठाने की जगह बताते हुए मुझसे यह बात कही कि इस्के तयार होने तक शायद हम तुम न रहें अफ़सोस! कि तीनहीं महीने के अंदर यह बात उन्हीं के आगे आई वे हर दम खुश दिल और हर काम में मुस्तैद रहा करते थे ॥

इस सफ़र की ख़ुशी के साथ सात बजे बाल मोरल आ पहुंचे आज हम लोग बयालीस मील चले और कल्ह चालीस कुल बयासी मील हुए ॥

झील आवन की यात्रा ।

शनीचर सितम्बर २९ । १८६१ ॥

सुबह को असमान का रंग देख कर संदेह होता था इस्से बड़ी फ़िक्र में हुई लेकिन कुहिरे के बीच से सूर्य की झलक मालूम होती थी और चारो तरफ़ खुलता हुआ नज़र आता था पौने आठ बजे आलिस् और लूई के साथ हम लोगों ने बैठने के मकान में हाज़िरी खाई और साढ़े आठ बजे कूच किया लूई और आलिस् हम लोगों के साथ और ग्रांट और ब्रौन मामूल मुताबिक़ कोचबक्स पर बैठे आसमान बहुत साफ़ होगया ॥

नदी के उत्तर तरफ़ सवारी चली आसमान खूब साफ़ हो गया और भला मालूम होने लगा कासल्टन् में डाक के घोड़े बदल कर डेरी तक गये ग्लेन्लीवी पर राह बहुतही खराब मिली हम लोग अपने टां-घनों पर सवार होकर मामूली रास्ते से ग्लेन्डेरी होते हुए वहां तक आये जहां से रास्ता फिर कर झील इचान् को जाता है लेकिन उस राह न गए सीधेही आगे बढ़े राह ढार तो नहीं थी लेकिन बहुतही नीची ऊंची थी और इतने पत्थल के ढोके पड़े थे कि भयानक मालूम होती थी ऐसी कुराह घोड़े की सवारी पर कभी नहीं हम लोग चले थे बिचारे घोड़ों के पैर से पूछना चाहिये राह में ठूलोकंस* नाम छोटी २ दो झील मिलीं इस्के सामने से इंकरोरी को फिरी है झीलों के पार हो-कर एक छोटा सा टुकड़ा ज़मीन का दलदल पाया गया घोड़े से उतर

कर पहाड़ के नीचे २ थोड़ी दूर पैदल चली इसी पहाड़ के दूसरी तरफ़ झील था फेर घोड़े पर सवार हुई ज़मीन ने पानी ऐसा सोख लिया था कि काई और घास बिल्कुल् चिपक गई थी कि सवारी में तकलीफ हुई और जब पहाड़ के उतार पर आये और भी नागवार हुआ बराबर चलते २ इस पहाड़ की तराई से क़रीब दो मील के निकल आये उम्मेद थी कि झील नज़र आवैगी लेकिन दूसरी एक छोटी पहाड़ी की आड़ होगई आख़िर को चलते २ नज़र आ गई शोभा इस्की बहुतही बढ़ कर थी बड़े २ सुढार चट्टान और बेनमुइकढूई पर्वत पर बर्फ़ जमे हुए बहुतही अच्छे मालूम होते हैं ॥

यहां से ईचान झील के किनारे हम लोगों ने वह जगह देखी जहां पारसाल हम लोग बहुत टटोलते और संभलते हुए चले थे और नीचे की तरफ़ झील आवन को देखा हवा बहुत सरद और तेज़ चल रही थी आख़िर को सवा दो बजे एक बड़े पत्थल की आड़ में झील से कुछ ऊपर की तरफ़ बैठ गए अफ़सोस हुआ कि छोर के अंत तक जहां पानी ज़ोर से बहता था न जा सके जल्दी से जलपान करके पैदल फिर चले और जाते वक़्त ज्यादा ऊंचे पहाड़ पर से गए ज़मीन बहुत ही नम और नोंची ऊंची थी पैदल चलना सहज नहीं था नेक लूई मुझ को अकसर चलने में सहारा देती थी आल्बर्ट और आलिस् सहायता बिना दौड़ते हुए चलते थे फेर घोड़े पर सवार हुई मेरा और आल्बर्ट का घोड़ा अच्छी चाल से जा रहा था और हमारा चोकन्ना और सब से होशियार नौकर ब्रौन् ख़बरदारी से राह दिखाता चलता था फेर ठूलोकंस पार होने के पहिले घोड़े से उतरना पड़ा लेकिन बाद इस्के सारी राह घोड़े ही पर रहे ॥

चार्ली इस्टवर्ट जो परसाल हम लोगों को ग्लेन्फ़िसाई मे ले गया था अब की भी वही साथ था यह शख़्स ख़ूब चल सक्ता है दो मर्तबे कुछ २ पानी ऊपर बरसा ओर नीचे की तरफ़ ज्यादा बरसता हुआ नज़र आया डेरी का हलाव इतना गहिरा था कि टांघनें के तंग तक पानी छूगया ओर रास्ता इतना नीचा ऊंचा था कि बयान से बाहर घोड़े बिल्ली ऐसे रास्ते से चिमिटते चलते थे क़रीब छः बजे के डेरी की तराई में आये भील आवन् से दश मील की दूरी थी गाड़ियां यहां मोजूद थीं अभी से अंधेरा हो चला था लेकिन इतनी रौशनी थी कि डाक के समान घोड़े दौड़ानेवाले लड़कों को राह सूझ पड़े ॥

मारलाज के पुल पर ब्रौन ने लैनटेनों को रौशन किया हम लोगों ने ब्रोन ओर ग्रान्ट को अपने ओढ़ने का ऊनी कपड़ा ओढ़ने को दिया जब वे इतनी दूर हम लोगों के साथ चलते हैं हम लोग हमेशा उनको ओढ़ने को अपना ओढ़ना दिया करते हैं ओर फेर गाड़ीपर सवार करा लिया करते हैं कांसिल्टन् में हम लोगों ने अपना २ घोड़ा लिया ओर आठ बजने के दश मिनट के बाद बालमोरल् पहुंच गए सफ़र अच्छी होने से बड़ी ख़ुशी हुई ओर सचमुच थकाहट नहीं मालूम हुई घरो भर एक साथ बैठ के खाना खाया ॥

तीसरी बड़ी यात्रा ग्लेन् फ़िसी ओर डाल् हुइनी ओर ब्लेयर एथोल की ।

मंगल, अक्टूबर ८, १८६१ ॥

सुबह के वक़्त आसमान धूमिल बल्कि अंधकार था लेकिन हम लोगों ने चलनाही निश्चय किया जरनैल ग्रे पहिले जा चुके थे । हम तीनों

लेडी उमदा गाड़ी पर सवार हुए आल्बर्ट और लूई कासल्टन् से एक गाड़ी पर रवाना हुए बादल ख़ूब घनाघोर था लेकिन पहाड़ों पर के कुहिरे के समान भयानक न था पानी बड़े ज़ोर से आ गया लेकिन कासलटन् में पहुंचने के पहिलेही खुल गया नीला आसमान नज़र आया हवा तेज़ थी इस्से ग्रांट ने कहा कि बिलकुल् साफ़ हो जायगा और बहुत अच्छा होगा कासलटन् में घोड़े बदल कर लिन्आफ़ डी से गिली या गिल्डी की नदी तक गाड़ी की सवारी में पहुंचे इसी जगह से पर-साल हम लोग टांघनों पर सवार हुए थे यह बालमोरल् से अठारह मील पर है घोड़े भी मौजूद थे इंकरोरी नाम टांघन मेरे लिये और एक नया टांघन आलिस् के लिये था आलिस का यह टांघन लांबा और सुरंग और देखने में बदसूरत लेकिन सूधा था और दूसरे लोग अपने २ मामूली घोड़ों पर सवार हुए वही चारली इस्टूवर्ट राह बतलाने पर था और एक टांघन खाने की चीज़ लादने के लिये और एक फ़ालतू घोड़ा इस लिये था कि ग्रांट और दूसरे लोग पारापारी सवार हुआ करें ॥

ग्यारह बजने पर दश मिनट बाद हम लोग ठीक पारसाल के ऐसा गिल्डी नदी के हलते हुए चले करीब एक घंटे के बहुत अच्छी तरह गए थे कि चारो ओर कुहिरा जम आया और हवा और पानी ने अपना ख़ूब ज़ोर दिखाया छतरी बारानी और एक ऊनी ओढ़ने से हम कुछ भी न भींगे प्यारे आल्वर्ट जो बराबर भींगी हुई ज़मीन पर पैदल चल रहे थे पानी से बहुत तर हो गए लेकिन इस्से उनको कुछ नुकसान न पहुं-चा और पहिले से अब की बहुत अच्छे रहे हम सब लेडी घोड़ेही पर सवार रहे आख़िर को दो बजे ज्योंही हम लोग उस रमणीक ग्लेन्फिशी

में दाखिल होने लगे जिस्के देखतेही मेकिन्राय के इलाक़े की बर्न नदी याद आती है बादल छूट कर साफ़ हो गया ब्रोन मेरे टांघन को थांभे एचाट नदी में हलता हुआ चला ओर बिलकुल् कपड़े की गठरी जो लोगों के हवाले थी टांघन पर से पानी में गिर पड़ी स्ट्रोन्ना बेरिन् का झरना ओर उस्के साथही दो छोटी गहिरी नदियां राह में बहुत अच्छी मालूम हुईं जंगल में पैठने से पहिले हम लोगों ने ठहर कर नदी के ऊंचे करारे पर जलपान किया यहां पर जरनेल ग्रे आ मिले अपने इंतज़ाम की ख़बर दी जल्दी से खा कर घोड़ों पर फेर सवार हो थोड़ी दूर गए एक बड़ी ढार जगह आये जहां घोड़े की सवारी का मौक़ा अच्छा न था अनगिनत छोटी २ नदियां ऊपर से बहती हुई कैसी भली मालूम होती थीं थोड़ी दूर पैदल चल कर फेर घोड़े पर सवार हो लिये ओर नदी के उसी पार रहना था ओर इन्वरेशाई के मकानों की तरफ़ जाना मंजूर न था इस्से कई सौ कदम पैदल चलना हुआ क्योंकि घोड़े के लिये राह बहुत तंग ओर अच्छी न थी आलिस का टांघन यहीं से फिसिलने लगा था मकान फ़र के विशाल वृक्षों ओर जूनीपर की झाड़ियों से घिरा हुआ बहुतही मनोहर मालूम होता था ये सब मकान टूट फूट गए थे देख कर खेद हुआ किसी समय यह छोटी सी जगह कैसी भली रही होगी ओर ऐसी सुंदर एकांत जंगल में नदी के निकट ऊंचे पर्वतों से घिरी हुई जगह में रहने से चित्त को आल्हाद होता है इन्हीं मकानों में से एक आतिश ख़ाने की दीवार पर लान् सीयर के हिरन की तसवीरें लिखी हुई थीं हम लोग उतर कर उस मकान में देखने को गए थे ग्रांट टांघन पर सवार किसानों के मकान के नीचे २ राह बताता हम को ले चला इसी जगह

पारसाल लार्ड और लेडी रस्सल हम लोगों से मिली थीं और अब की बार दो गाड़ी हम लोगों के लिये वहीं मौजूद थीं घोड़े से उतर कर सवार हुए और चार बजे यहां से चलना था लेकिन पांच बज गया हम लोग गाड़ी पर सवार होकर उसी राह से चले जहां पारसाल घोड़े की सवार पर गए थे गाड़ी के लिये राह बहुत ख़राब थी दूसरे जंगल में पहुंचे इस राह से चलने में इंक की झील पीछे छूटी बड़ी सड़क पर बाईं ओर झील की तरफ़ देखने के लिये फिरे अफ़सोस कि इस वक़्त अंधेरा होने लगा और बहुत सी अच्छी जगह सूझ न पड़ी पंद्रह मील सवारी पर आ चुके सड़क पर गाड़ी की राह में कई पुल मिले (कार के पुल से नज़दीक रथवेन का टूटा हुआ किला था जिस्को हम लोगों ने शाम के वक़्त कुछ अंधेरे में देखा और मन किंग्यूसाई के मुसाफिरख़ाने के नज़दीक लकड़ी के एक लंबे पुल पर से गाड़ी गई किंग्यूसाई की बस्ती में थोड़े से मकान इधर उधर अलग २ हैं वहां पहुंचने से पहिलेही यह देख कर हम लोगों को आश्चर्य हुआ कि लोग अपने २ दरवाजे पर खड़े बाहर की तरफ़ ध्यान लगाये हैं इस्से हम लोगों को यक़ीन हुआ कि हमी लोगों की राह तक रहे हैं किंग्यूसाई में थोड़े से लोग अजीब तरह बोलते चालते गोल बांधे हुए थे हम लोगों को साफ़ पहिचान न सके कि कौन हैं ग्रांट और ब्रौन ने उन लोगों को गाड़ी से अलग रक्खा और उन लोगों के पूछने पर दूसरी २ गाड़ी की तरफ़ दिखला कर जवाब गोल २ देते थे इस्से बड़ी दिल्लगी रही एक बूढ़ा बड़ी चोकसी से खोज़ लेने और पता पूछने लगा ॥

फेर हम लोग आगे चलते २ न्यूटनमोर के गांव में आये जहां

म्याक् डोलन् * खिदमतगार का मकान है यहां स्पे का संगम ट्रूइम् नदी से हुआ है यहां से डाल्हुइनी दश मील पर है ठंढ पड़ने लगी हवा तेज़ हुई और कुछ पानी बरसने लगा आख़िर को पौने नौ का वक्त हो गया जब हम लोग डाल हुइनी के मुसाफिरख़ाने में पहुंचे जहां हम लोगों ने अपने-२ टांघनों को छोड़ दिया था वहां से उन्तीस मील आये यह मकान गांव से अलग है यहां भी थोड़े लोग जमा थे मैंने सोचा कि उन्हों ने हम लोगों को पहिचाना लेकिन मालूम होता है कि नहीं पहिचाना एक लौंडी ने मुझे आबर्डीन और एडिन् बर्ग में देखा था वहां पहुंचने पर सिरिफ़ उसी ने पहिचाना सीढ़ी के ऊपर हम लोग गए यह मुसाफ़िरख़ाना फेटर केरन् के मुसाफ़िरख़ाने से बहुत बड़ा है लेकिन उस्के सा उम्दा और उंजाला मकान नहीं है एक कमरा बैठने के लिये और एक खाना खाने के लिये और एक अच्छा बड़ा सा कमरा सोने के लिये था आल्बर्ट के पोशाक़ पहिरने का कमरा भी इतना ही बड़ा था मेरी इन् रूस † जो बहुत होशियार और बड़े काम की थी और लेडी चरचिल् की लौंडी इन दोनों को भी एक कमरा मिला अर्थात् सब के रहने को मकान मिला लेकिन अफ़सोस कि कोई खाने की चीज़ अच्छी न मिली सिरिफ़ चाह और हाइलेंड मुल्क के मुर्ग़ी के दो बच्चे मिले सो भी निरे दुबले और दुखिये और बहुत दिनों के भूखे और एक

---

* यह पारसाल तर्ई की बीमारी से अबरगेल्डी में मर गया इस्की बेवा जो मिचल् नाम बालमोरल् के लोहार की लड़की है और बहुतही नेक है अब हमारे कपड़ा, पहिनाने की खिदमत में है.॥

† यह हमारे पोशाक पहिनाने की ख़िदमत में थी अब शाहज़ादी हिलीना (अर्थात् शाहज़ादी क्रिश्चियन्) को कपड़ा पहिनाती है इस्का बाप हमारे प्यारे चचा बादशाह बेल्जियम् के साथ अड़तीस वर्ष तक रहा था ॥

आलू भी न था और कोई पुडिंग और फ़न् भी मिला दोनों लौंडियां भी साथ न आईं और दोनों नौकर अपनी और हमारी चीज़ों को सुखा रहे थे अर्थात् इन में से भी कोई हाज़िर न था रात का खाना अच्छा नहीं हुआ और शाम का वक़ पानी बूंदी का था रात ज्यादा जा चुकी थी हम लोग जल्दी से आराम करने चले गये मेरी और लेडी चर्चिल् की लौंडी माक्सटौड ग्रांट ब्रौन और इस्टूबर्ट के साथ सीढ़ी के नीचेही सौदागर मुसाफ़िरों के उतरने के कमरे में खाना खा रही थीं उनको सिरिफ़ हमारे उन्हीं दोनों दुखिये मुरग़ बच्चों का बचा हुआ मांस मिला था ॥

बुध, अक्टूबर ६ ॥

सुबह रोशन और सुहावनी थी आल्बर्ट ने उठतेही देखा कि लूनी-मेक् फ़रसन अपने बांसुरी बजानेवाले और दो बीबियों को साथ लेकर बड़े तड़के पहुंचा और पोशाक़ पहिनते वक़ हम लोगों ने एक तंबूर और बांसुरी की आवाज़ सुन पाई और मालूम किया कि नये वालन्टीयर लोग आये हैं इन सब सामानों से मालूम होता था कि हम लोगों की ख़बर ज़ाहिर होगई लेकिन लोग गिनती ही के थे इस्से वह बात पाई न गई इस मकान की लेडी मोटी और बूढ़ी काले साटन की पोशाक सुफ़ेद फ़ीता और नारंजी रंग के फूल लगे हुए पहिने थी पौने नौ बजे हम लोगों ने हाज़िरी खाई और साढ़े नौ बजे चले फूलों का तुर्रा लिये लियै लूनी और उस्की बीबी और लड़कियां मौजूद थीं और मकान के सामने वालन्टीयर लोग क़तार बांधे खड़े थे ये लोग शनीचर के तीसरे पहर से इकट्ठे हुए थे ॥

कल्ह की तरह गाड़ी की सवारी में चले जंगल और ऊंचे २ पहाड़ों की शोभा बहुत भली मालूम होती थी । पास आफ़इमुस्टर की राह से

गए दोनों बग़ल ओर सामने के पहाड़ सुहावने थे बाईं तरफ़ के पहाड़ को बोरआफ़ बाड़ीनोक कहते हैं ओर दाहिनी तरफ़ वाले को एथोल सो, पास आफ़ड्रुमुस्टर बीच में होने से पर्तशायर ओर इन्वरनेशयर ये दोनों जगह अलग २ होगई हैं ॥

फेर थोड़ी दूर आगे जाकर हम लोग फ़ील गर्री पर पहुंचे जो बहुत रमणीक है लेकिन दूर २ के पहाड़ कुहिरे से ढके थे ओर बादल भी बहुत दूर नज़र आता था यहां न मालूम किसका एक छोटा सा मकान् शिकार खेलने का बड़ी उमदा जगह पर बना है दोनों तरफ़ पहाड़ों के बीच से नदी बहती हुई ओर सामने उसके झील है राह में बहुत से गंडेरिये जाते हुए मिले लेकिन उनके साथ भेड़ी बकरी न थी ग्रांट ने कहा कि ये लोग फ़ाल् कर्क मक़ाम से फिरे जाते हैं झील गर्री छोड़ आने के बाद ओर डालना कारडाक के मुसाफ़िरख़ाने में पहुंचने से पहिले जो डालहुइनी से तेरह मील पर है एक पानी ख़ूब बरस गया थोड़ी दूर तक ज़मीन समथर मिली वहां खेती बारी ख़ूब होती है डालना कारडाक के मुसाफ़िरख़ाने में हम लोगों के पहुंचने का शुभा लोगों को हो गया था ओर इंतज़ार में थे चार घोड़े की गाड़ी तेज़ पोस्टिलियन् के साथ तयार थी लेकिन जरनैल ग्रे के इस बात के कहने पर कि ये वे लोग नहीं हैं बल्कि वे हैं जिनके लिये सिरिफ़ दो घोड़ों का हुक्म दिया गया है एक निकम्मी जोड़ी जोती गई ओर वेसाही एक कोचवान हांकने को कोचबक्स पर बैठा ओर हम लोग चल दिये यह सफ़र बराबर एसी ही कटी ॥

गर्री नदी अति रमणीक है कोइक् ओर फ़िशी नदियों की तरह बड़े २ चट्टानों पर से बहती है ओर उसके किनारों पर बर्क ओर पहाड़ी आश्

के पेड़ बहुत मनोहर मालूम होते थे और भी कई जगह खूब पानी बरसा डालना कार डाक से कई मील पर ड्यूक् आफ़ एथोल मामूल के मुताबिक़ घुठनों तक कुरती और शिकारी कपड़े पहिने हुए एक खूब-सूरत सुरंग छोटे टांघन पर सवार मिले और गाड़ी के नज़दीक २ बराबर साथ रहे उनसे मालूम हुआ कि यहां हम लोगों की अवाई का चरचा था लेकिन उन्हों ने किसी से कुछ नहीं कहा था फ़िर एक पानी बरसा लेकिन बेनीग्लो नज़र आते २ खुल गया किल्लीयक् रांकाई की घांटी में बर्क के पेड़ों से बिलकुल सुनहरा रंग छाये बहुत भला मालूम हुआ डी नदी के किनारे के समान नहीं है कि जहां एक पत्ती का नाम नहीं ॥

बूवर नदी और बूवर का झरना रस्ते मे मिला लेकिन् ठहरने में न आया ड्यूक हम लोगों को एक नई राह से ले गये जो बहुत ही सुंदर है अफ़सोस हुआ कि उस्के नज़दीक से रेल की सड़क जायगी और वह भी सड़क कट जायगी जिस्पर से हम लोग ड्रुमुस्टर की घांटी होते हुए आये ड्यूक ने इस जगह को बहुत दुरुस्त किया है रास्ते के चारो तरफ़ पहाड़ बहुत भले मालूम होते थे पत्तियों पर पियराई तो छा गई थी परंतु पतिझार नहीं हुवा था धूप हरजगह अच्छी तरह से थी पेड़ों के छाये २ गाड़ी पुराने किले के दरवाजे तक पुहुंच गई और पिछले सचह बरिस की हज़ारों बातें इस वक्त सब ध्यान पर चढ़ गई प्यारी डचिज़ के सिवाय जो दरवाजे पर खड़ी थी वहां और कोई न था मैने उनको और मिस् म्याक्रीगर को बड़े प्यार से गले लगाया और शिकारी असबाब से सजे हुए बड़े कमरे और सीढ़ी को मैने अच्छी तरह से पहिचान लिया और उसी सीढ़ी पर से ऊपर चढ़ गए डचिज़ हम लोगों को एक कमरे मे ले गई जिस्को मैंने झटपट पहिचान लिया

कि इसी मे लेडी केनिंग रहती थीं इसमें हम लोगें के असबाब रक्खे गए फिर हम लोग दूसरे बहुत अच्छे सजे कमरें के देखने के लिये आये जिसमे हम लोग पहिले रह गए थे एक मे बिकी जब चार बरस की भी न थी दो कुरसियें पर सोई थी खाने के कमरे मे काफ़ी पीई जो बहुत अच्छी थी फिर हिरन की सीगें को जो नीचे की एक दालान मे लगी हुई थी देखा एक बहुत मोटा ताज़ा मुलायम बाल का काला टेलियर ड्यूक का लाड़िला कुत्ता नज़र आया फिर हम लोग एक अनोखी ओर बहुत हल्की गाड़ी पर सवार हुए निरी किश्ती की शक्ल जिस्मे चार पहिये लगे ओर दो घोड़े जुते हुए ओर एक पोस्टीलियन भी था इस्के अंदर हम चारो आदमी ओर ड्यूक ओर डचिज़ उस कुत्ते के साथ सवार हुए लेडी चरचिल् जरनैल ग्रे ओर मिस मेक्गीगर दूसरी गाड़ी पर बेठे ओर हमारे दोनें नोकर उनके कोचबक्स पर बेठे इन दोनें नोकरें के लिये ये सब बातें नई ओर बड़े दिल बहलाव की थीं दिन बहुत उम्दा था साढ़े बारह बज चुका था हम लोग गाड़ी पर सवार हो कर पेड़ें के छाये २ सुहावनी राह से बारह के बाद चालीस मिनट पर ग्लेंटिल्ट में पहुंचे जो अपूर्व स्थान है सड़क टिल्ट की तरफ़ फेर खाए है ओर फिर आगे बढ़ कर दूसरी तरफ़ मुड़ी है ऊंचे २ अलग २ पहाड़ तेज़ बहती हुई पहाड़ी टेल्ट नदी के दोनें तरफ़ बहुत भले मालूम होते थे बड़े २ पेड़ ख़ास कर बर्क ओर आलुर पानी के किनारे शोभायमान थे ।

मारबल् लाज होकर जिसमें एक रखवारा रहता है फ़ारिस्ट लाज में आये इसके आगे गाड़ी की सड़क नहीं है ओर नदी का पाट यहां चोड़ा है रात को हमारे टांवन बाईनाक नामे लार्ड फ़ाइफ़ के शिकार गाह

में जो थे सुबही से यहां आये थे और बिचारे उन् जानवरों को दाना नहीं मिला था फ़ारिस्ट लाज ब्लेयर से आठ मील पर है यहां पहुंच कर प्यारी डचिज़ से रुख़सत हुए और बूढ़े पीटर फ्रेज़र साबिक़ रखवारे के सरदार को देखा जो अब दो लाठियों के सहारे से चलता है ड्यूक के रखवारे लोग और उनके बांसुरी वाले और एक भले आदमी जो उनकी मुलाक़ात को आये थे यहां मौजूद थे ॥

हम लोगों के चलते ही दो बजा हम लोग अपने टांघनों पर सवार थे ड्यूक और उनके हमराही बारह आदमी पैदल चले दो बांसुरी वाले आगे और दो पीछे पारापारी बड़े मनोहर शब्द से बजाते हुए चले उस जंगल और पहाड़ों के बीच हमारे और ड्यूक के लोग घुठनों तक कुरती पहिने और हमारे टांघन और कारवां बाक़ी राहों से मुड़ते हुए चलते बड़े छबीले मालूम होते थे ॥

डोनल्ड माक् बीथ ड्यूक का एक रखवारा पहरा देने में बहुत होशियार है यह क्रिमिया में भी गया था आदमी देखने में सुघर और निशान लगाने में नामी है यह क्या और ऐसे ही ड्यूक के सब आदमी हैं थोड़ी दूर तक तो राह अच्छी मिली इसके बाद पहाड़ की तराई में ऊंची नीची राह पर ज़रूर हुआ कि घोड़े साईस के सहारे से चलें और इसी तरह जब ऊंची नीची राह ख़राब मिलती है और तेज़ जाना होता है साईस के सहारे से घोड़े को लेजाते हैं ॥

ड्यूक देर तक हमारे नज़दीक २ पैदल रहे और पुराने वक़्त की बातें याद कर के दिल बहलाने के लिये कहने लगे कि मुझे मालूम है आप मुझपर भरोसा नहीं रखती हैं मैं आप को राह बतलाना नहीं

चाहता मैंने हंसकर जवाब दिया कि मुझे उन्हीं का राह बतलाना पसंद है जो हम को हमेशा से बतलाते आये हैं ॥

आख़िर को तीन बजने के करीब हम लोग ठहरे ओर डाल्क्रोना काई नाम एक जगह पर जल पान किया वहां से टिल्ट नदी का ऊंचा करारा ओर लाक झील की तरफ़ की एक खाढ़ी नज़र आती है ओर पीछे की तरफ़ भी जगह बड़ी सुहावनी थी इस लिये जब तक खाने की चीज़ खोली जाती थी हम लोगों ने वहां तसवीर खींची अपने मुवाफिक़ खाने की चीज़ें हम लोगों ने ले ली ओर बाक़ी मामूल के मुताबिक़ आदमियों को दिया इस मर्तबे खाने वाले बहुत थे बाद जल पान के हम लोग रवाना हुए कई क़दम में पैदल चली फेर आल्बर्ट के कहने से सवार हुई इस लिये कि राह बहुत नीची ऊंची ओर नम थी थोड़ी ही देर में हम लोग पोल्टार्फ के बड़े मशहूर ओर गहिरे पानी के हलाव तक पहुंचे बहुत पानी बरसने के बाद इसमें से हल कर पार होना असंभव है ड्यूक हमारे टांघन के एक बग़ल चलने को तयार हुए ओर दूसरे बग़ल के लिये सांडी की तजवीज़ हुई लेकिन हमने ब्रान के लिये कहा क्योंकि इस पर बहुत भरोसा हम को था सांडी मेक आरा राह दिखलाने को ओर बांसुरी वाले बराबर बजाते हुए आगे २ चले मुझ को देखते हुए मालूम हुआ कि ओर जगह के हलाव से टार्फ़ का हलाव ज्यादा गहिरा नहीं है ओर आदमियों के घुठनों तक पानी नहीं पहुंचा लेकिन बीच में जहां पानी की धारा बहुत तेज़ थी ओर ऊंचे से आई है यकायक् आदमियों की कमर तक पानी पहुंच गया सांडी लोट आया ओर मैंने उससे कहा बिहतर होगा कि तुम ड्यूक की जगह हो लो उसने ऐसाही किया ड्यूक ने पीछे से हमारे इस बात की हंसी

सांडी से की हम लोग बहुत अच्छी तरह चले और सब लोग पीछे २ हलते आये हमारे पीछे ही आल्बर्ट और दूसरे लोग घोड़े पर सवार थे और हमारे कई आदमी एक २ टांवन पर दो २ चढे थे जरनैल ग्रे ने नन्हे पीटर राबर्टसन् को अपने पीछे बैठा लिया था ॥

उसके बाद राह बहुत ढार मिली और सचमुच घोड़े पर की सवारी अपार हो गई लेकिन पैदल चलना इस जगह कठिन था और जमीन नम थी इसमे हम लेडी लोगों को घोड़े ही पर चलना पड़ा आल्बर्ट देर तक पैदल चले सिरिफ एक दफ़े हमको कई क़दम के लिये उतरना पड़ा क्योंकि इस जगह टांघन का कदम जमना मुशकिल था राह की ख़राबी से ब्रोन टाघन के बग़ल बराबर नहीं चल सक्ता था कभी नीचे ढोकों के सहारे से और कभी टांवन के आगे जा रहता था ड्यूक अथक्क आदमी था ॥

टिल्ट का पाट बराबर छोटा मिलता गया झरने से दो मील आगे बढ़ कर टाफ़ टिल्ट नदी में मिला है इस राह से एक चोड़ी खाड़ी पर आये इस जगह ऊंचे पहाड़ कम थे और ब्रीमर की पहाड़ी सामने नज़र आई बाइनोक की छोटी नदी के पार हुए और कौंटी मार्च मुक़ाम पर पहुंच कर हम लोग टहरे यह पर्थ और आवार्डीन की सरहद्द है ड्यूक ने चांदी की एक पुरानी शीशी निकाली और उसमें से थोड़ी ह्विसकी हम को और आल्बर्ट को पीने के लिये दी और हमारे हेल्थ अर्थात् यह शराब हमारी सलामती के लिये पीये जाने की तजवीज़ करके हमारे ब्लेयर जाने से जो ख़ुशी उनको और वहां के सब लोगों को हुई थी उसको बयान किया और अपनी उमेद हमारे यहां बारंबार आने और खेरियत से घर फिर जाने की ज़ाहिर की और अपने संक्षेप बायन को

ख़ास हाइलेंड ज़ुबान में इस तोर पर ख़तम किया "निस्! निस्! निस्!" सिट् एअर "ए निस्! ए रिस्! ए रिस्! ए रिस्!" (जिस्का उच्चारण यह है "नीश! नीश! नीश! "शीट ईअर, ए नीश! ए रीस! ए रीस! ए रीस!") इसका अर्थ यह है "अब! अब! अब! वह उसी के लिये, अब! फिर! फिर! फिर! इसी आवाज़ से सब लोगें ने जयकार दिया इसके बाद ग्रांट ने डयूक आफ़ एथोल के लिये तीन दफ़े जयकार दिया ओर सब लोग भी बहुत खुशी से उसके शरीक हुए हमारे तेज़ रफ़ार इंकरोटी टांघन को ब्रोन के खुशी की बलंद आवाज नागवार हुई ॥

फिर हम लोग क़रीब तीन मील के आगे बढ़े छ: बजने मे दश मिनट बाक़ी रहा जब अंधेरा लगा था बाई नोक पहुंचे शिकारगाह नजदीक आने पर बांसुरीवालें ने बजाना शुरु किया ओर बांसुरी की आवाज पर घोड़े ख़ूब चलने लगे इस आवाज के साथ घोड़े की सवारी ओर पैदल का चलना बहुत भला मालूम होता था एथोल् के हाईलेंडर लोग हम लोगें के चलने ओर फेर आने के वक़ बासुरी बजाई ॥

लेडी फ़ाइफ़ बड़ी मेहरबानी से बाई नोक के शिकारगाह तक खुद आई ओर हम लोगें को चाय दिया कि जिस्से हम लोगें को बड़ी ताज़गी हुई फिर हम लोग सवार हो कर सुशील डयूक आफ एथोल से रुखसत हुए वे घर लोट गए उनको सचमुच बड़ी कड़ी राह पड़ी रात का वक़ ओर चांदनी नदारद। ओर राह का हाल बख़ूबी मालूम साढ़े आठ बजे हम लोग ख़ैरियत से मकान पर पहुंचे अगरचे कुछ २ पानी बरसता था लेकिन रात को गरमी थी ओर आसमान साफ़ हो कर तारे निकल आये थे ॥

आज उनहत्तर मील की सफ़र हुई ओर कल्ह साठ मील की हुई थी

इसके बराबर खुशी और दिल लगी की सफ़र कभी नहीं हुई थी इसके याद करने से हमको हमेशा बड़ी खुशी होगी और सफ़र करने की ख़ाहिश बढ़ेगी प्यारा लूई जो हम लोगों को बड़ा दिलपसंद साथी है साथ था और बहुत ही खुश हुआ जब से हमको बड़ा भारी रंज* हुआ है उसके बाद सचमुच यही खुशी हुई थकावट नहीं मालूम हुई हम लेडी लोग पोशाक नहीं बदला और घरोभर इकट्ठे बैठ कर खाना खाया और बाद खाने के हे लेंड का नक्शा देखने लगे ॥

पिछली यात्रा का हाल ।

बुध, अक्टूबर १६, १८६१

सुबह का वक़्त बहुत साफ और स्वच्छ था इससे बड़ा आनंद हुआ चमकते हुए नीले आसमान पर बादल का लेश न था जाबजा घासों पर शबनम पड़ी थी और धूप की रौशनी में पहाड़ों पर नीले आसमान का प्रतिबिंब ऐसा मालूम होता था जैसे ताज़े अंगूर पर सबज़ी सबेरे ही उठे और आलिस्, लुई और लेंचन के साथ अपने कमरे में हाज़िर खाई और नौ बजने में बीस मिनट बाक़ी रहे आलिस् लूई और लेंचन को साथ लेकर हम लोगों ने कूच की आज को सुबह की शोभा अकथनीय है यद्यपि पेड़ पतझार हो रहे थे तथापि गावं बहुत भले मालूम होते थे ॥

बर्फ़ अबतक नज़र आती थी और हवा बहुत तीखी चल रही थी कासिल्टन् में डाक के घोड़े बदल कर हम लोग ग्लेनक्लूनी पर से होते हुए ग्लेन् क्लाटर पर आये जो बहुत मनोहर मालूम होता था आल्बर्ट

* डचिज़ आफ़ केंट का परलोक सिधारना ।

ने इस जगह की बड़ी सराहना की दो घंटे से ज्यादा में हम लोग झील कल्लाटर पर पहुंचे झील पर जाते हुए राह बड़ी ख़राब मिली यहां हम लोगों के टांघन मौजूद थे कई क़दम पैदल जाकर मैं अपने नेक फ़ाइबो नाम टांघन पर सवार हुई और आलिस इंकरोरी पर ॥

दिन का प्रकाश बहुत उज्जल था और राह बड़ी खुशी से सहज मे कटी झील कल्लाटर के उत्तर तरफ़ एक तरह की पगडंडी की राह से जो बहुत समथर और सहज सुढार थी लिटिल्‌केरन्‌टर्क पर्वत पर हम लोग चढ़े चारो तरफ़ की शोभा बड़ी अद्भुत थी केरन की चोटी पर की जमीन बहुत ही समथर थी और घास ऐसी जमी थी कि गाड़ी उसपर चल सके यह पहाड़ इतना ऊंचा था कि लाकनागार पहाड़ की सब से ऊंची चोटी पर का भी मैदान नज़र आता था उस तरफ़ कोई चीज़ ऐसी देखने के लायक नहीं थी लेकिन दूसरी तरफ़ बड़ा रमणीक था । आज का सा उज्जल और साफ़ दिन देख कर पारसाल के बेन् मुइक ढूई की सैर का दिन याद आया पीछे की तरफ़ बेन् मुइक ढूई का पहाड़ था जिसका यहां से नजर आना मुशकिल था उसके चारो तरफ़ केरन् गोर्म और ब्रेराइक् और बेन् आवन याआन् और बेन्नाभोर्ड आदि पर्वत हैं । बेनोग्लो का पहाड़ और उस की सब क़तार और पछिम की तरफ़ झील के नज़दीक शिकेलियन् का पर्वत और ब्लाक् माउंट के नजदीक के पहाड़ बख़ूबी नज़र आये और फ़ोर्टविलियम् की तरफ़ के बेन् नेविस् पहाड़ को भी हम लोगों ने पहचाना ॥

केरन् के ऊपर जाते हुए हम लोगों ने झील कंटर को देखा जो एक छोटी झील झील कल्लाटर से आगे बढ़ कर है पानी उसका बहुत स्याह और मैला है आगे बढ़ कर हम लोग केरन् ग्लेशाई में गये जिस

के एक सिरे पर एक केरन् * बना हुआ है ऊपर की रौशनी से सब चीज़ें साफ़ और ख़ूबसूरत मालूम होती थीं फ़ाइफ़ शायर, पर्त और स्टर्लिं के बीच के देहात और लोमंड पहाड़ दिखाई दिये हैलेंड के मुल्क इतनी दूर २ तक जो नज़र आये इस्से चित्त को बड़ा आनंद हुआ हम से इसका बयान अच्छी तरह नहीं हो सका लेकिन जिन जगहों को देखा उनका मुख़तसर हाल नीचे लिखा है ॥

उत्तर की तरफ बेन् मुइकढूई, ब्रेराइक्, केरन् गोर्म, बेन आवन् और बेन्ना भोर्ड ॥

पूरब तरफ़ लाकनागार आदि ॥

दक्खिन पच्छिम की तरफ़ बेनीग्लो या बेनीग्लो और शिकेलियन के सामने की पहाड़ियां और डंकेल्ड और ब्लाक् माउंट के पहाड़ ॥

ठीक पच्छिम की तरफ़ बेन् नेविस् ॥

दक्खिन की तरफ़ लोमंड की पहाड़ियां और बीच मे पर्त का मुल्क ॥

थोडी दूर पैदल चल कर मै अपने घोड़े पर सवार हुई उम्दा समथर ज़मीन पा कर आध घंटे मे केरन् लोकन की घांटी के सिरे तक पहुंच गए इस जगह मुझे और लूई को क्लोवा याद आया सिरिफ़ फरक़ इतनाहीं था की पीछे की तरफ़ इतने लंबे चैाड़े पहाड़ न थे केरन् लोकन की घांटी बहुत सकरी है आइला नदी इसी घांटी मे से फेर खाए बहती हुई रुपहरे पट्टेसी मालूम होती थी और किनारे २ दरख़्त लगे थे पहाड़ ढार और हरे भरे और घांटी का सिरा भी बहुत सुढार था दलदल के सबब हमें लोग फेर खा कर एक ऐसी जगह पहुंचे जहां

* पत्थर की ढेर जो ब्रिटानिया के लोग पुराने ज़माने में क़बर के निशान की तरह बनाते थे ॥